लक्ष्मीनारायण लाल

लंका काण्ड

(सम्पूर्ण नाटक)

'लंका कांड' का प्रथम प्रस्तुतीकरण 'मंजरी' नयी दिल्ली की प्रथम प्रस्तुति के रूप में दिनांक १४ मार्च, १९८३ को श्रीराम सेण्टर के मंच पर हुआ।

हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली-११०००२
द्वारा प्रसारित

लंका कांड

लक्ष्मीनारायण लाल

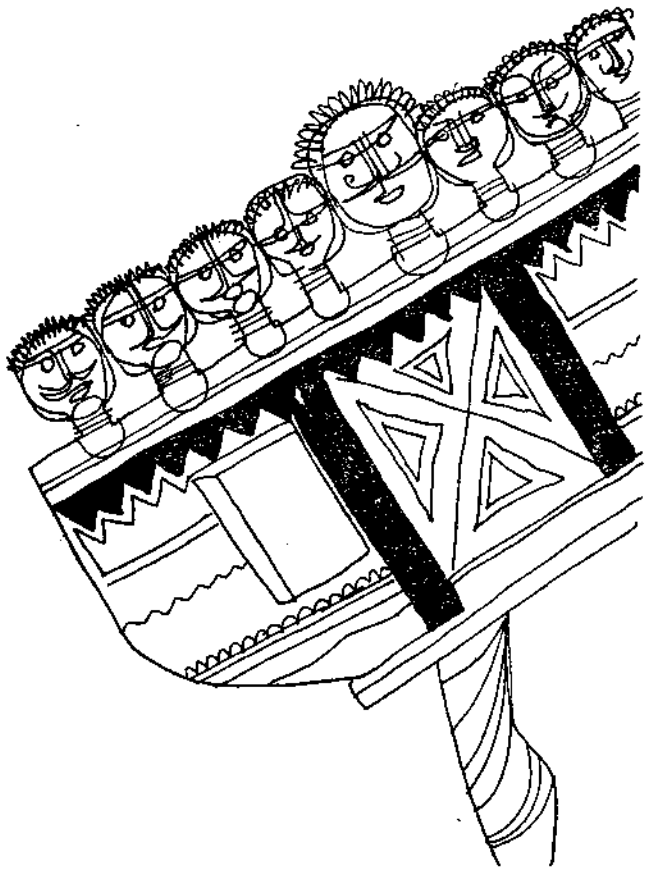

Lal, Lakshmi Narain (Dr.)
LANKA KAAND (Play) ,H.B.C.
1983, Rs. 12.00

© लक्ष्मीनारायण लाल

इस नाटक को खेलने, रंगमंच, रेडियो, दूरदर्शन पर किसी भी प्रकार से प्रस्तुत करने, इसको आंशिक रूप या किसी भी रूप में प्रकाशित करने या किसी भी संग्रह में लेने से पूर्व इस कृति के नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण लाल की लिखित पूर्व अनुमति अनिवार्य है।

एकमात्र वितरक
हिन्दी बुक सेन्टर
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२

प्रकाशक : स्टार बुक सेन्टर
नई दिल्ली-२
मूल्य : बारह रुपये मात्र (१२.००)
संस्करण : (प्रथम) १९८३
मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

प्रकाशकीय

'लंका कांड' एक कुलीन वधू 'गौरा' की व्यथा और संघर्ष का सार्थक नाटक है। वह परम्परागत पत्नी की भूमिका निभाते हुए 'नशेबाज' पति मोहन के उत्पीड़न को हरपल झेलती है और उसी में सार्थकता ढूँढ़ने की कोशिश करती है, मगर धीरे-धीरे स्थितियों ने उसे अपने अन्दर की शक्ति का साक्षात्कार कराया। वह अपने आपसे नया जन्म लेकर स्वयं जीवन संग्राम के लिए समस्याओं की लगाम सम्भाल लेती है और बचा हुआ मोहन जो भावनात्मक और आर्थिक संघर्षों में पराजित होकर नशे की शरण में चला गया था, को सुरक्षित बचा लाने में सफल होती है।

एक गौरा तो घूँघट में छिपी है, वही गौरा जब लतिका के रूप में दूसरा जन्म लेती है तो गौरा के लतिका तक की जो आत्म यात्रा है, वही उसकी अस्मिता की प्राप्ति है।

असल में गौरा की कहानी नारी की आन्तरिक शक्ति की पहचान की एक रंग यात्रा है, जिसमें नारी शरीर पर दस्तक से लेकर उपार्जन न करने वाली घरेलू महिला की बेबसी तक के तमाम संकट समाहित हैं। मूल्यों के संकट को झेलते हुए वह जैसे ही धर्म भीरू स्त्री से नैतिक आक्रोश युक्त नारी 'लतिका' बनती है तो स्थितियाँ झटके से करवट लेती हैं। लेकिन फिर भी सफलता उसे तब मिलती है जब नैतिक आक्रोश की जगह नैतिक साहस एवं नेक बुद्धिमानी का योग होता है।

'लंका कांड' नारी उत्पीड़न की लक्ष्मण-रेखा पारकर नैतिक साहस के साथ संग्राम में जूझने और विजयी होने का नाट्य है। सहधर्मिणी की भूमिका के साथ-साथ सहकर्मिणी और सह नागरिक की भूमिका में नारी के खड़े होने का यह सार्थक रंग है।

लंका काण्ड के चरित्र

मोहन
गौरा (लतिका)
अचला
पहलवान
सिपाही
जसवंत
सोहन

प्रियवर किशोर
और
प्रमिला मेहरा को

प्रथम अंक

पहला दृश्य

(मंच पर प्रकाश आते ही मंच के एक स्थल पर दुर्गा संगीत बजाते हुए दो लोग। एक स्त्री आरती कर रही है। फिर थोड़ी देर बाद एक कमरे के एक दृश्य में सिर से लम्बा घूंघट डाले गौरा तेज प्रकाश में खड़ी दिखती है। पास ही अँधेरे में कुर्सी पर उसका पति मोहन बैठा है। मंच दृश्य में उस जगह जहाँ अभी तक संगीत बज रहा था वहाँ शक्ति-प्रतिमा चित्रित है।)

मोहन : **(अँधेरे में)** सुनो-सुनो-सुनो, तुम्हें देखना चाहता हूँ। तुम्हें देखना चाहता हूँ। देखना चाहता हूँ तुम्हें। हो सकता है तुम उतनी बदशक्ल न हो। सुना नहीं, तुझे देखना चाहता हूँ। पास आओ। इधर देखो, मेरी तरफ। इधर घूमो। देखो इधर। पास आओ, मेरी तरफ। इधर।

(गौरा का चेहरा धीरे-धीरे घूंघट से बाहर आ गया है।)

गौरा : इतना अँधेरा। इस तरह अँधेरे में क्यों बैठे हो? रोशनी जलाओ, मैं दिख जाऊँगी। ऐसे अँधेरे में मुझे देखना चाहते हो? अभी कुछ देखने को और बचा है क्या? जब पीते हो तभी मुझे इस तरह बुलाते हो। पर अँधेरे में बैठकर क्यों पीते हो? मैं भी तुम्हें देखना चाहती हूँ। डरते हो?

मोहन : नहीं।

गौरा : डरते हो, डरते नहीं हो, सच कोई एक ही होगा।

मोहन : इधर देखो। तुझे देखना चाहता हूँ।

गौरा : जिस दिन तुम जरूरत से ज्यादा पीना चाहते हो, यही भूमिका बाँधते हो। तुम देखना चाहते हो, पर सिर्फ कहते हो, देखते नहीं। सिर्फ कहते हो और पीने लगते हो।

मोहन : नहीं, आज सिर्फ देखना चाहता हूँ।

गौरा : किसे ?

मोहन : तुम्हें।

गौरा : आज ही क्यों ? अभी ही क्यों ?

मोहन : तुम फजूल की बातें करती हो।

गौरा : लो, देखो मुझे।

(सिर से आँचल गिरा देती है। फिर वही शक्ति संगीत।)

मोहन : रुको, मैं जरा-सी पी लूँ।

गौरा : फिर देखना नहीं होगा।

मोहन : तभी हो सकेगा।

गौरा : नशे का सहारा लेकर देखना—यह देखना नहीं, देखने का बहाना है। देखना है तो सिर्फ देखो—सिर्फ तुम और मैं—बीच में यह बाहरी चीज—क्यों ?…डर है—सच्चाई से आँख नहीं मिला सकते; तभी तो पर्दा डालने के लिए यह नशा है।

मोहन : क्या बकती हो ?

गौरा : लो, आँखों पर नशे का चश्मा चढ़ाये बगैर देखो।

मोहन : चेहरे पर पर्दा करो। सुनती हो या नहीं ?

गौरा : इधर देखो, तुम्हें देखना चाहती हूँ।

मोहन : नहीं-नहीं, रोशनी मत जलाओ।

गौरा : अँधेरे में देखना नहीं होगा।

मोहन : तुम तो रोशनी में हो।

गौरा : जबतक कोई दूसरा अँधेरे में है तबतक इस रोशनी में प्रकाशन नहीं।

(दरवाजे पर दस्तक शुरू होती है।)

गौरा : दरवाजा खोल दूँ—तुम्हारे दोस्त आ गये।

मोहन : दरवाजा खुला है। (जोर से) अबे, दरवाजा खुला है। दरवाजा खुला है। खुला है दरवाजा।

गौरा : मैं जाऊँ। दरवाजा बन्द है—भीतर से।

मोहन : मुँह ढँक लो, खबरदार। ठीक है। इधर रोशनी जला दो। नहीं-नहीं, रुको, मैं खुद जला लूँगा।

गौरा : मुझे देखना चाहते थे ?

मोहन : याद है न लक्ष्मणरेखा ? इसके बाहर गयी तो रावण खड़ा है इन्तजार में। बाहर निकली तो लंका काण्ड।

गौरा : हद से बाहर लंका काण्ड, सिर्फ अल्फाज, रटी-रटाई बातें हद से बाहर लंका काण्ड—इसका मतलब समझते हो ? 'हाँ' तो यह जिन्दगी में क्यों नहीं है ?

मोहन : अच्छा चलो खेल खेलते हैं। तुम सीता हो, यह रोशनी लक्ष्मणरेखा है। लक्ष्मणरेखा को पार करो। अरे खेल है, बढ़ा पैर। उठा पैर, चल। बेवकूफ डरती क्या है, खेल करना भी इसे नहीं आता—बदतमीज, गवाँड़िया…। बाहर निकलती है या नहीं ?

गौरा : हाँ-हाँ, खेलने की मुझे पहले बहुत आदत थी। देखो खेल। लक्ष्मणरेखा पार कर रही हूँ।

(घूँघट उठाकर चलती है। रोशनी से बाहर निकलती है। अन्धकार में चीख उठती है। प्रकाश उभरता है। जसवन्त की पकड़ से गौरा लड़ती हुई निकल जाती है। फिर वही शक्ति संगीत।)

जसवन्त : यार ! यह कौन थी ?

मोहन : तुमसे पूछूँ तुम कौन थे, तुम क्या थे, जवाब दे सकोगे ?

जसवन्त : यार ! इस भाभी को तो पहले कभी देखा ही नहीं था। लगता है, कोई खेल कर रहे थे।

मोहन : पर तुमने पकड़ा खूब।

जसवन्त : मैं तो कुछ समझ ही नहीं सका। भाभी, मेरी गलती को, अगर मुझसे हो गयी है तो, क्षमा करना। कोई खेल कर रही थी···।

मोहन : सीता ने जब लक्ष्मणरेखा पार किया तो रावण ने सीता को इसी तरह पकड़ा होगा।

जसवन्त : मैंने पकड़ा नहीं, वह खुद जैसे मेरी पकड़ में आ गयी।

गौरा : जैसे मैं इसकी पकड़ में आ गयी। लो श्री शिवशंकर···।

(दोनों गिलास उठाते हैं और एक ही साँस में पी जाते हैं।)

मोहन : यह कथा कहनी नहीं सच्चाई है, हर समय की सच्चाई हमेशा, हर अँधेरे में रावण खड़ा रहता है, जानकी के चक्कर में। बाहर पैर निकाले नहीं कि धर दबाये। अरे, कुछ लायेगी कि पूजा-पाठ में मरेगी। मेरे लिए यही थी रावण।

(आती है।)

गौरा : चुप भी रहो।

(प्लेट में कुछ देती है।)

मोहन : वह जो मेरा बड़ा भाई सोहन है नमकहराम सोहन, उल्लू का पट्ठा। वह अपने आपको समझता क्या है? मैं कोई दूध पीता बच्चा हूँ क्या? मैं भी आवे का मालिक हूँ। वह बी० ए० फेल है। मैं बी० ए० पास हूँ। मेरे बाप को क्या पता कि सोहन इतना नालायक निकलेगा। पता होता तो इसकी ऐसी-की-तैसी हो जाती। अब मैं इसकी ऐसी-की-तैसी करूँगा। वह मजा चखाऊँगा कि इसको नानी याद आ जाएगी। मैंने पुलिस को लिखकर दे दिया है कि सोहन कितने क्या-क्या काले धन्धे करता है। चोरी और सीना-जोरी।

जसवन्त : सिगरेट तो भूल ही गया। दौड़कर लाता हूँ। माचिस तो होगी?

मोहन : अरे, सिगरेट भी होगी। मुझे किस चीज की कमी है। सिगरेट ला। अरे, सुनती है कि नहीं।

गौरा : कहाँ है? मुझे पता नहीं।

(मोहन बढ़ता है। इधर-उधर ढूँढ़ने लगता है।)

मोहन : पता नहीं तो इस घर में रहती क्यों है? यहीं कहीं नहीं थी? अरे, बोलती क्यों नहीं? **(चीजें फेंकता है)** खोपड़ी तोड़ दूँगा। कहाँ है?

जसवन्त : यार, मैं अभी आया।

(जाता है।)

मोहन : मेरी नाक कटाती है। मेरे घर में एक पैकेट सिगरेट नहीं। घूँघट ऊपर उठा। दिखा अपना चेहरा। नाटक करती है। **(सिर से आँचल खींचता है।)** अँधेरे में जसवन्त तुझे दिखाई नहीं पड़ा? तो फिर चीखी क्यों? मेरे देखते ही वह तुझे खा जाता? अरे, एक झापड़ मारूँ तो जसवन्त क्या सोहन नमकहराम को भी बुखार आ जाये। सोहन की यह हिम्मत, वह मुझे शराबी, गैरजिम्मेदार, जाहिल कहे। जो मेरे पैर की धूल बराबर नहीं, वह मेरे बारे में बदतमीजी की बातें करे। बोल, मैं ठीक कहता हूँ ना?

गौरा : हाँ।

(मोहन गौरा को छोड़कर अपनी कुर्सी के पास आता है। गिलास भरकर पीता हुआ।)

मोहन : मेरे साथ पहला विश्वासघात मेरे बाप ने किया। वह लोगों को घर पर बुलाकर घूस देता था। खुद शराब नहीं पीता

था, पर लोगों को अपने हाथ से पिलाता था। मैंने अपनी आँखों से देखा जिसका पिता ऐसा होगा उसका बेटा कैसा होगा—सोहन जैसा बेईमान, चार सौ बीस, तिकड़मी कोई और होगा? सोहन ने मुझे धोखा दिया। वह कैसा बड़ा भाई जो अपने छोटे भाई के साथ दगा करे। मेरा हक मारकर वह जिंदा रह सकता है?

(जसवन्त सिगरेट पीता हुआ आता है।)

जसवन्त : तुम्हारा पड़ौसी पहलवान अपने आपको समझता क्या है? मैंने डाँट दिया। मेरा मुँह देखता रह गया।

मोहन : उसे कह दो जाकर, जो मोहन को तंग करने की कोशिश करेगा, वह सीधे जेल की हवा खायेगा। वह पहले मेरे हाथ से पिटेगा, फिर जेल की सजा काटेगा। यह पहले मेरे हाथ से पिटेगा, यह पहलवान भी सोहन का आदमी है। उसकी दुकान पर काम करता था। दुकान पर छापा पड़ा तो ताले लग गये।

जसवन्त : पहलवान नहीं बदमाश है।

मोहन : एक-एक को ठीक करूँगा। लोग समझते क्या हैं?

जसवन्त : इधर आ जाओ फिर।

गौरा : नहीं, अब इन्हें और मत दीजिए।

मोहन : वाह-वाह! तू मेरी कौन है? पाँव की जूती, हाथ की मैल, या चमड़े की जबान। इसने चूँकि टाँग अड़ाई इसलिए ढालो दूनी पिलाई।

गौरा : पाँव पड़ती हूँ, हाथ जोड़ती हूँ ऐसा मत करो।

मोहन : क्यों अपनी बेइज्जती कराती है?

गौरा : मेरी इज्जत तुम्हीं हो।

मोहन : यह किस जमाने की औरत है बेवकूफ। इसे क्या पता मेरी इज्जत क्या है? कौन है जो मेरी शान के खिलाफ एक भी अल्फाज कहे। कौन है···बुलाओ तो सोहन को। उसकी

खाल खींचकर रख दूँगा। बड़ा इज्जतदार बना फिरता है—सब झूठ है, धोखा है, बिल्कुल रँगा सियार है। सोहन पर बत्तीस मुकदमे चल रहे हैं—बाईस क्रिमनल, दस सिविल। अपनी स्टैनो मिस सैनी का कत्ल सोहन ने कराया, उसका सबूत मेरे पास है। मैं चश्मदीद गवाह पेश कर सकता हूँ। सोहन मुझे शराबी कहता है, मैं उसे कभी नहीं माफ कर सकता।

गौरा : अच्छा पी लो, वरना···।

मोहन : वरना, वरना क्या···(**मारता है।**) बोल वरना क्या? बोल, जबान चला।

गौरा : क्यों मारते हो अपने आपको।

मोहन : (**मारता हुआ**) बददिमाग। मैं अपने आपको मार रहा हूँ? जो तू है वही हूँ मैं? तेरी यह हिम्मत। दस हजार में खरीदकर लाई हुई दो कौड़ी की औरत। यह तेरी किस्मत में नहीं था कि तू मेरी बीवी बने। यह मेरी बदकिस्मती थी कि मैं तेरा पति बना। हूँ नहीं तेरा पति—होना पड़ा। मैं पति होता उस जालिम स्नेहलता का। क्या शानदार हसीना थी वह। क्या कोई इश्क करेगा जैसा हमने किया। पर वही सोहन नमकहराम कहीं का। मेरा बड़ा भाई नहीं दुश्मन। हत्यारा! स्नेहलता के माँ-बाप से बोला—मोहन शराबी है—आपकी खैरियत इसी में है कि यह शादी किसी कीमत पर न हो। पर कीमत मैं अदा कर रहा हूँ। अदा करूँगा आखिरी साँस तक। यह सोहन मेरे पैर की धूल, क्या समझता है मुझे और अपने आपको।

(इस बीच गौरा उठकर शक्ति चित्र के सामने पूजा करने लगी है, फिर वही शक्ति संगीत।)

मोहन : ओरे! बन्द कर यह पोपलीला। घर नहीं सनीमा बना रखा है। पति-पत्नी को मारता है और दुखी अबला

नारी—भगवान् के सामने गा पड़ती है। कितना झूठ और पाखण्ड है हमारी जिन्दगी में—आदमी शराब न पिये तो पागल हो जाये।

गौरा : शराब पीकर वही पागलपन।

मोहन : क्या फिल्मी अन्दाज में बोलती है मेरी गौरा-पारवती। अरे, गुस्से में आँख फाड़कर मुझे क्यों नहीं कहती। मुझसे डरती क्यों है बुजदिल? मैं बहादुर हूँ और बहादुरी की कदर करता हूँ।

(लड़खड़ाकर गिर पड़ता है। गौरा उठने में मदद करती है।)

मोहन : हट जा, नहीं चाहिए तेरी मदद।

जसवन्त : यार! तुम भी अजीब हो, बेमतलब भाभी पर हाथ उठाते रहते हो।

मोहन : तुम कौन हो यह कहने वाले?

जसवन्त : यह लो, बकवास बन्द करो।

मोहन : बकवास तो तुमने शुरू कर दी—बेमतलब भाभी पर हाथ। मतलब-बेमतलब क्या होता है?

जसवन्त : तुम्हारा सिर होता है।

मोहन : तू मेरे घर में बैठा है, या मैं तेरे घर में? बोल—बता?

जसवन्त : हम किसी के घर में नहीं, खुदा के घर में बैठे हैं। हवा में, सबसे ऊपरी मंजिल में। स्वर्ग में—जहन्नुम में।

मोहन : इसने ज्यादा पी ली। मैं इसकी मरम्मत करता हूँ।

जसवन्त : तूने ज्यादा पी ली। मैं तेरी मरम्मत करता हूँ।

(दोनों लड़ने की तैयारी करते हैं।)

मोहन : तेरा दिमाग ठीक कर दूंगा।

जसवन्त : क्यों खामखा बहक रहा है।

गौरा : लड़ना हो तो मेरे घर से बाहर। यहाँ यह नहीं हो सकता।

मोहन : यह तेरा घर है या मेरा?

गौरा : मेरा।

मोहन : कबसे?

गौरा : जबसे यहाँ आयी।

मोहन : यहाँ कौन ले आया?

गौरा : तुम।

मोहन : तुम माने?

गौरा : मेरा पति।

मोहन : मेरा पति माने?

जसवन्त : कद्दू।

मोहन : ओरे, तू चुप रह। अब बोला तो तेरी हड्डी-पसली एक कर दूंगा। मेरा पति माने?

(गौरा सोचती है।)

गौरा : अगर अब मैं बोली, तो बेतरह पिट जाऊँगी। यह मुझसे उत्तर नहीं चाहते कोई बहाना चाहते हैं मेरे ऊपर अपना गुस्सा—गुस्सा नहीं, छोटापन—छोटापन नहीं, आत्म-विश्वास की कमी, नहीं-नहीं अपना दुःख—नहीं-नहीं, अपने अपमान नहीं-नहीं, अपनी चोट—हाँ-हाँ, अपनी चोट—अपने से लेकर मुझतक, सब तक, यहाँ तक, इनकी पहुँच है। मारने का इन्हें कोई बहाना चाहिए। अब कुछ भी बोलना इन्हें बहाना देना है।

मोहन : बोलती क्यों नहीं, मेरा पति माने?

(चीजें फेंकता हुआ यही प्रश्न पूछता रहता है।)

गौरा : (सोचती हुई) पर कुछ न बोलना, यह भी कम खतरनाक नहीं। अगर ये अकेले ही प्रश्न करते जायेंगे बिना कोई बहाना पाये, तो नशा बहाना होगा।

मोहन : मेरा पति माने?

गौरा : तुम।

मोहन : तुम माने ?

गौरा : मेरे पति।

मोहन : मेरे पति माने ?

गौरा : मेरे सबकुछ।

मोहन : (**हँसता है**) यह क्या बकती है, कुछ समझ में नहीं आता। कैसी बोलती है। पूजापाठ करती है। ईश्वर के नाम लेती है, तभी सबकुछ गड्डमड्ड हो गया है। (**हँसता है**) कहती है—सबमें ईश्वर है। पति परमेश्वर है—कुछ समझ में नहीं आता। उसकी समझ में भी कुछ नहीं आता। पति परमेश्वर है, इसका क्या मतलब ? बता, इसका क्या मतलब ?

गौरा : जानकर क्या करोगे तुम ?

मोहन : मैं पति परमेश्वर की सलाह बनाऊँगा। मजा आ जायेगा।

गौरा : वही तो कर रहे हो।

मोहन : जोर से क्यों नहीं बोलती।···मेरा नाम क्या है ?

गौरा : मोहन।

मोहन : मोहन। फिर से कह।

गौरा : मोहन।

मोहन : एक बार और।

गौरा : मोहन।

मोहन : मोहन—जो सोहन का छोटा भाई है।

गौरा : नहीं, वो सोहन का बड़ा भाई है।

मोहन : सोहन मुझसे बड़ा है। बोल ?

(**आवेश में गौरा को पकड़ लेता है और उसका दायाँ हाथ उमेठना शुरू करता है।**)

मोहन : सोहन मुझसे किस माने में बड़ा है ? बेईमानी में ? झूठ, अपराध, चोरी, सीनाजोरी में ? उसके पास कोठी है, बंगला है, मेरे पास वही पुराना मकान—इसीलिए वह मुझसे बड़ा है ?

(**गौरा दर्द से चीखती है। जसवन्त चिल्लाकर दौड़ता है।**)

जसवन्त : (**दौड़कर**) पागल तो नहीं हो गये। बेरहम !

मोहन : शुक्र है मुझे हत्यारा नहीं कहा, वरना तेरी हत्या कर देता।

जसवन्त : चुप बे ! गौरा जैसी शरीफ, सीधी, नेक बीवी पर जो इस तरह हाथ उठा सकता है, वह हत्यारे से भी बदतर है।

मोहन : क्या कहा ?

गौरा : किसी को हमदर्दी दिखाने की कोई जरूरत नहीं।

जसवन्त : तुम देवी हो या राक्षस हो।

गौरा : देवी है, तभी राक्षस है।

मोहन : मैंने अपनी इकलौती बेटी अचला की इतनी शानदार शादी की कि सोहन देखता रह गया। चालीस हजार खर्च किए। किसकी कमाई थी ? मेरी।

गौरा : बाप की कमाई थी, अचला के नाम अलग जमा कर गये थे। सोहन भाईसाहब की मेहरबानी, उन्होंने चालीस हजार पर हमें सूद भी दिया।

मोहन : चुप रह सोहन भाई, सोहन भाई। मैं उस नमकहराम की कमाई खाता हूँ क्या ?

गौरा : क्यों अपनी जबान गन्दी करते हो ?

मोहन : फिर उस हरामजादे का नाम लिया तो उल्टा टाँग दूँगा। वैसे उस बार क्या किया था, याद है न ?

गौरा : वह न होते तो हम भीख माँगते।

मोहन : (**बोतल उठाये हुए**) क्या, फिर से तो कह।

(**जसवन्त बचाता है।**)

मोहन : इसे तुम देवी कहते हो, जो अपने पति के खिलाफ चौबीस घण्टे रहती है। जो मेरे दुश्मन से मिली हुई है।

गौरा : छी: छी: छी:।

मोहन : हाँ, मैं राक्षस हूँ।

जसवन्त : सच, यह देवी है तभी तू राक्षस है।

गौरा : शराबी के लिए देव और राक्षस में कोई फर्क नहीं। उसे जहर और अमृत में कोई फर्क नहीं। खबरदार किसी ने अगर मुझे दया-दृष्टि से देखने की कोशिश की।

जसवन्त : वाह ! धन्य हो।

मोहन : धन्य होगा तेरा बाप।

जसवन्त : तेरा बाप।

मोहन : फिर जबान हिली तो पटककर चढ़ बैठूंगा।

जसवन्त : आगे बोले तो जबान खींच लूंगा।

मोहन : ओ रे !

जसवन्त : जा-जा रे !

(दोनों लड़ाई शुरू करते हैं। चीजें गिरती हैं, सामान बिखरता है। गौरा चुप खड़ी देख रही है। मारपीट शोर। दरवाजे पर दस्तक। जसवन्त गिर गया है। उसके ऊपर मोहन बैठा है। दस्तक तेज होती है।)

मोहन : जा, कोई भी हो मना कर दे। जा, अरे सुनती क्यों नहीं ! जा, कह दे, साहब पूजा कर रहे हैं। अरे, यह तो सुनती ही नहीं। सोचती है मेरे हाथ-पैर खाली नहीं है। **(चीज फेंक-कर मारता है, पर गौरा पर कोई असर नहीं)** ओ रे, खबरदार इसी तरह चुपचाप पड़े रहना, नहीं तो तेरी हड्डी-पसली एक कर दूंगा। चुपचाप पड़े रहना। खबरदार जो जबान हिली तेरी। तू नहीं जानता मेरी ताकत। कौन है बे ! चला जा। कह दिया एक बार दरवाजा नहीं खुलेगा। यह मेरा घर है। किसी के बाप का नहीं। अबे, तू बहरा है रे भड़भड़िया···पहले अपना नाम बता।

जसवन्त : जसवन्त।

मोहन : ओ सूअर के बच्चे ! तुझसे कौन पूछ रहा है ?

जसवन्त : अगर इजाजत हो तो उठ जाऊँ।

मोहन : तो ऐसा बोल न। मेरे घर में कोई खाने की कमी है। अबे तुझे अपने हाथ से खिलाऊँगा। तू भी क्या याद करेगा किस दिलदार रईस से तेरा पाला पड़ा है।

गौरा : वह कच्चा आटा है।

मोहन : चुप रह, तुझे क्या पता। ले खा। उठ, मेरे हाथ से खा। नहीं खाया जा रहा। खोल मेरे प्यारे। समझ गया न। यह रोटी है।

जसवन्त : समझ गया।

(मोहन उठकर दरवाजा खोलने आता है।)

गौरा : **(सोचती है)** यह आदमी जानबूझकर नीचे गिरा। जान-बूझकर यह लड़ाई हार जाता है। इसे मुफ्त में पीने की जो मिल जाती है। कोई पीकर बड़ा बनना चाहता है। कोई पिलाकर उससे भी बड़ा बनना चाहता है।

(मोहन दरवाजा नहीं खोल सकता।)

मोहन : दरवाजा मुझसे नहीं खुला। जाकर देखो— कह दो, साहब खाली नहीं है। जाती है या नहीं। **(धक्के देता है)** लात की जात बात से क्यों माने। ओरे !

(जाकर फिर जसवन्त के ऊपर बैठ जाता है। देखता है— जसवन्त सो गया।)

मोहन : कमाल है, यह तो सो गया।

(गौरा द्वारा दरवाजा खोलते ही पहलवान आता है।)

मोहन : बिना इजाजत अन्दर आने की हिम्मत कैसे हुई ?

पहलवान : पड़ोस में रहना मुश्किल कर दिया है। यह घर है या बाजार ? इतना शोरगुल-गपाड़ा।

मोहन : चुपचाप चले जाते हो या नहीं। यह 'ट्रेसपासिंग' है। तुम पर मुकदमा चला सकता हूँ।

पहलवान : यह कौन आदमी है ? उठो यहाँ से। कह देना इतनी ज्यादा पी ली।

मोहन : यह बदतमीजी बर्दाश्त के बाहर है। तुम बाहर जाते हो या नहीं ? गेटआउट। अपने आपको बड़ा ताकतवर समझते हो। बन्दूक निकालो मेरी। बन्दूक लाओ।

जसवन्त : (**जगकर**) अयं, यह क्या हो गया। मैं ख्वाब तो नहीं देख रहा।

पहलवान : भाग जाओ वरना अभी पुलिस को खबर करता हूँ। इस घर को क्या समझ रखा है ? बहू, कबतक इस जुल्म अत्याचार को सहती रहेगी ?

गौरा : जबतक सह सकूँगी।

पहलवान : इस बदमाश को अपने घर में क्यों आने देती हो ?

मोहन : सावधान, तुम लक्ष्मणरेखा पार कर रहे हो।

पहलवान : ओह, लक्ष्मणरेखा याद है ? वही पार किया तो यह हालत हो गई।

मोहन : खड़ी क्या है, बन्दूक ला बन्दूक, इसकी ऐसी-की-तैसी करता हूँ।

पहलवान : बन्दूक देखी भी है ?

मोहन : जसवन्त, उठा ला तो, देखता क्या है, यहाँ से जाते हो कि नहीं ?

पहलवान : वाह बेटे ! मिट्टी के शेर, गोलपप्पे, रंगे सियार ! बहू, तुम दूर रहो।

गौरा : अपने घर में यह नहीं होने दूंगी।

पहलवान : जो हो रहा है उसे होने दोगी ?

गौरा : नहीं।

पहलवान : तो उसे क्यों नहीं रोकती ?

गौरा : किसे ?

पहलवान : जो पहले हो चुका है।

गौरा : जो बाद में होगा, जो होने को है जो पहले हो चुका है··· पहला और पहले के बाद ये सब कहने की बातें हैं— सच्चाई सिर्फ वही नहीं है जो तुम जानते हो, इन्हें मालूम है, जो मुझे पता है। तुम कृपा कर मेरे घर से चले जाओ।

पहलवान : एक शर्त पर। यहाँ शोर नहीं होगा।

गौरा : कोई शर्त नहीं, यह मेरा घर है। अगर मैं खुद अपने घर की देखभाल नहीं कर सकती तो मैं खुद इस घर में इस तरह नहीं रहूँगी।

पहलवान : पर इन लुच्चों-बदमाशों की वजह से तुम जैसी नेक शरीफ औरत क्यों अपना घर छोड़े ?

गौरा : नेकी और शराफत अगर हार जाय तो इससे बड़ा अपराध और क्या हो सकता है ?

पहलवान : खबरदार, फिर शोर-शराबा किया तो पुलिस को रपट करूँगा अब।

(**जाता है।**)

मोहन : ओरे आजा !

जसवन्त : बड़ा पहलवान बनके आया था।

मोहन : दुम दबाकर भाग गया।

जसवन्त : दिन को सितारे नजर आ गये।

मोहन : सारा मजा किरकिरा कर दिया। इस बार मैं बनाता हूँ।

(**दोनों बैठते हैं।**)

मोहन : कहाँ है ?

जसवन्त : यहीं तो रखी थी। (**ढूंढ़ना**) कहाँ गयी ? पहलवान तो नहीं ले गया।

मोहन : तो मेरे पास कोई कमी है क्या। एक नहीं तो दूसरी सही।

गौरा : नहीं, अब और नहीं। हरगिज नहीं। बहुत हो गया। (**दोनों में संघर्ष**) क्यों अपने आपको मारने पर तुले हो। मैं यह खुदकुशी नहीं होने दूंगी।

मोहन : (मारता हुआ) हट, चली जा यहाँ से। बड़ी आयी। भागती है या नहीं।

गौरा : नहीं, तुम्हें खुदकुशी नहीं करने दूँगी— मैं खुद अपने आपको मिटा दूँगी।

(दोनों में लड़ाई)

(जसवन्त आकर मोहन को खींचकर अलग कर देता है।)

मोहन : (जसवन्त की पकड़ में चीखता हुआ) छोड़ दो, छोड़ दो मुझे। यह मेरी दुश्मन है। मैं इसकी बोटी-बोटी कर दूँगा। छोड़ता है या नहीं। कौन है तू मुझे पकड़ने वाला ? निकल जा मेरे घर से।

गौरा : छोड़ दो। छोड़ो। छोड़ दो।

(मोहन को छुड़ाती है। मोहन गौरा को मारता है।)

मोहन : बता कहाँ है ? कहाँ छिपा रखा है ?

(गौरा इशारा करती है। मोहन बोतल पाकर गिलास में ढालता है। गौरा रो रही है। जसवन्त एकटक गौरा को देख रहा है।)

मोहन : खाना लगाओ। हम खाकर एक साथ हुसैन बाड़ी जायेंगे —बहुत अच्छा गाती और नाचती है। और क्या नाम है उस नयी छमक-छल्लों का ? हसीना बानो—नहीं-नहीं, रूपी— रूपी। हम दोनों साथ जायेंगे।

जसवन्त : मैं नहीं जाऊँगा तेरे साथ। तू इस लायक नहीं।

मोहन : अच्छा-अच्छा, मैं नालायक हूँ।

जसवन्त : नालायक नहीं हैवान।

मोहन : हैवान के बच्चे ! जा-जा, घर जाकर सोजा। आज मैं अकेले जाऊँगा। जा-जा जल्दी जा, पनवाड़ी वाले चौराहे पर मिलना ओरे। (जसवन्त जाता है। गौरा उठकर दरवाजा बन्द करती है। वहीं सिर टिकाकर रो पड़ती है। मोहन गिलास मुंह पर लगाता है। फिर वही शक्ति संगीत दृश्य।)

द्वितीय अंक

पहला दृश्य

(गौरा, शक्ति प्रतिमा के सामने पूजा कर रही है। जसवन्त आता है। उसे देखते ही गौरा घूंघट कर लेती है।)

गौरा : वह घर में नहीं है।

जसवन्त : अभी तो आया हूँ।

गौरा : (चुप)

जसवन्त : पूजा का प्रसाद दो भाभी।

गौरा : प्रसाद नहीं है।

जसवन्त : आप तो हैं।

गौरा : जाओ यहाँ से, कैसी बातें करते हो ?

जसवन्त : एक बार मुझे घूंघट उठाकर देख लो। बस, मुझे भगवान का सारा प्रसाद मिल गया।

गौरा : वह कहाँ है ?

(जसवन्त बढ़ता है।)

जसवन्त : पता नहीं। मैं तो सीधे घर से आ रहा हूँ। दिन में टेलीफोन पर बात हुई थी मोहन से, शाम को जरा जल्दी आना— कहीं बाहर चलने की स्कीम बना रहा था। आज कहीं जुआ खेलने को भी कह रहा था भाभी। तुम्हारी दशा मुझसे देखी नहीं जाती। जिस हालत में तुम यहाँ हो वह मौत से भी बदतर है।

गौरा : इतनी बातें मत करो, जो कहना है फौरन साफ-साफ कह दो।

जसवन्त : भाभी, तुम्हारे लिए मेरी जान हाजिर है।

गौरा : असली बात कहो। मेरा दम घुट रहा है।

जसवन्त : मेरे साथ भाग चलो।

गौरा : अच्छा···और ?

जसवन्त : इस घर को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़कर।

गौरा : और ?

जसवन्त : अभी इसी वक्त। यहाँ से बहुत दूर जाकर तुम्हारे साथ एक नया स्वर्ग बसायेंगे।

गौरा : (सोचती है) इसके लिए कुछ भी कह डालना, कुछ भी कर डालना कोई खास बात नहीं है। कितनी निचाई तक गिर सकता है, कोई अन्दाज नहीं लगा सकता। (प्रकट) देवरजी, मैं दिल्लगी कर रही हूँ, बुरा मत मानना— अगर मैं तुम्हारे साथ न भागना चाहूँ तो क्या करोगे जी ?

जसवन्त : मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ।

गौरा : जैसे ?

जसवन्त : फजूल बात करने का समय नहीं है। वक्त बरबाद मत करो। मोहन यहाँ किसी वक्त आ सकता है।

गौरा : मोहन कहाँ है ?

जसवन्त : भाभी।

गौरा : बस, झटपट बता दो—मुझसे नाराज होकर क्या करोगे ?

जसवन्त : ओ हो ! हमारे पास समय नहीं है।

गौरा : समय तुम बरबाद कर रहे हो। झटपट बताओ न, तब बदले में मेरा क्या करोगे ?

जसवन्त : तुम्हें तरह-तरह से बदनाम कर सकता हूँ।

(गौरा सोचती हुई)

गौरा : बदनामी औरत की सबसे बड़ी कमजोरी है।

जसवन्त : तुम्हारे पति मोहन को पूरी तरह से तुम्हारे खिलाफ कर सकता हूँ।

गौरा : जैसे मैं इन्सान नहीं, कोई सामान हूँ।

जसवन्त : बकवास बन्द करो। हमारे पास वक्त नहीं।

गौरा : मेरे पास बहुत वक्त है। इतना सारा वक्त और बचपन से लेकर अबतक की इतनी यादें, इतनी तकलीफें, गरीबी बेबसी, अपमान। इतना वक्त है, मेरे पास कि बचपन से लेकर अबतक अपनी सारी जिन्दगी फिर से जीऊँ···फिर से जी लूँ। और तार-तार कर दूँ, इस पूरे वक्त को। मेरे पास इतना ज्यादा वक्त है इन्तजार करने का, उस समय का, जब मैं इस घूँघट की बेहयाई से मुँह निकालकर देखूँगी। देखूँगी उस समय को, उस आदमी को जो औरत को इस तरह देखना चाहता है, जैसे वह कोई खिलौना है। (प्रकट) तो देवर जी, जाओ तैयारी करके आ जाओ मैं भी तबतक तैयार हो लूँ। हैं जी।

जसवन्त : मैं बिल्कुल तैयार हूँ।

गौरा : पर मुझे तो तैयारी करनी है, औरत हूँ न।

जसवन्त : जल्दी करो।

गौरा : हाय, बहुत जल्दी ना मचाओ देवर जी। बैठो, बैठ जाओ न। कुछ खाने-पीने को लाऊँ।

जसवन्त : तबतक टैक्सी ले आता हूँ।

गौरा : नहीं, बैठो मुझे डर लग रहा है।

जसवन्त : मोहन आ जायेगा।

(गौरा अन्दर जाती है। मोहन आता है। जसवन्त पिस्तौल निकाल लेता है। मोहन अपनी दुनिया में है।)

मोहन : यार, देर हो गयी, माफ करना। आज फस्ट क्लास प्रोग्राम बनेगा पार्टनर। बहुत देर तो नहीं हुई तुम्हें आये। तुम अकेले ही शुरू कर सकते थे—गौरा कहाँ है ? गौरा···!

जसवन्त : खामोश ! आगे आवाज निकाली तो···।

मोहन : तो आज इस तरह शुरू करोगे। यार, मुझे इस तरह के

फिल्मी सीन से बहुत नफरत है। पर तुम्हारा क्या कसूर चारों ओर फिल्म की ही हवा है। वाह अच्छा है। पिस्तौल हाँ, अब नकली ही चीज असली लगती है। अबे, इसे ऐसे नहीं ऐसे पकड़ते हैं।

जसवन्त : हट जाओ, खबरदार !

मोहन : हाँ-हाँ, गोली भरी है, तो क्या हुआ, मैं बचपन से भरी पिस्तौलों से ही खेला हूँ। गौरा···गौरा !

(गौरा आती है।)

गौरा : यह क्या ? यह क्या करते हो ?

मोहन : अरे, मजाक कर रहा है, तू भी बेवकूफ ही रही। ला कुछ। अरे, साजो-सामान ला, हमें आज बहुत जल्दी है। हम आज एक खास जगह जायेंगे। फिर उस खास जगह से एक और खास जगह जायेंगे। क्यों रे ? आज कैसे देख रहा है। अयं, बात क्या है ?

(मोहन उधर अपनी तैयारी में लग जाता है।)

गौरा : इसे छिपा लो। यहाँ पुलिस आ सकती है। लेने के देने पड़ सकते हैं।

(जसवन्त डरकर पिस्तौल छिपा लेता है।)

गौरा : जाकर थोड़ा साथ दे दो। हिम्मत और समझ से काम लो।

जसवन्त : यहाँ पुलिस कैसे आ सकती है ?

गौरा : अरे, सावधान रहना चाहिए। जाकर वहाँ···।

जसवन्त : मुझे उससे नफरत है।

गौरा : देवर जी ऐसा नहीं कहते। जाकर पास में बैठिये। नफरत दिल में छिपाकर रखिए। वहीं तो नशा है। ऐसे क्यों देखते हो ?

जसवन्त : तुम्हारे लिए जान हाजिर है। जो कहोगी वही करूँगा। पर खबरदार वक्त हाथ से नहीं जाने देना है।

गौरा : वक्त पर अब मेरी निगाह है।

(जसवन्त मोहन के पास जा बैठता है।)

मोहन : यार, आज तुम कुछ उदास लग रहे हो या मुझे ही ऐसा लग रहा है। कोई तकलीफ हो तो बताओ। पिस्तौल कहाँ गयी ? यह लो, खुश रहो।

(दोनों पीते हैं।)

मोहन : अरे, यह क्या, एक ही घूँट में। यार, कमाल करते हो। धीरे-धीरे पीओ। (देता है।) आराम से चलेंगे, जल्दी क्या है ?

जसवन्त : हमारे पास वक्त नहीं है।

मोहन : यह वक्त क्या चीज होती है ?

जसवन्त : बकवास बन्द करो।

मोहन : अच्छा भाई। तुमने एक बार पूछा था—मैं अपनी बीवी घूँघट में क्यों रखता हूँ। बात यह है कि···।

जसवन्त : अब मुझे उसके बारे में कुछ नहीं जानना तुम्हारी खैरियत इसीमें है कि जबान बन्द रखो।

मोहन : उल्लू ! गधा !

जसवन्त : नामर्द।

मोहन : जबान खींच लूँगा।

जसवन्त : साले, तुझे भाभी के चेहरे से नफरत है। तेरी आँखों में अब-तक वही स्नेहलता बैठी है। वही स्नेहलता, जिसने तेरे मुँह पर झापड़ मारकर कहा कि मैं ऐसे शराबी से शादी करना क्या, बात तक नहीं करना चाहती। उस अपमान का बदला तू इससे ले रहा है।

(मोहन गुस्से में जसवन्त को गले से पकड़ लेता है।)

मोहन : क्या कहा, फिर से तो कह। सोहन के फैलाये हुए झूठ को चाटने वाले कुत्ते। तेरी यह हिम्मत। स्नेहलता जैसी बीसों

लड़कियाँ तब मेरे आगे-पीछे चक्कर लगाती थीं। जा छोड़ देता हूँ, खबरदार फिर ऐसी बदतमीजी की तो···!

जसवन्त : नामर्द।

(मोहन पर टूटता है। दोनों में लड़ाई। गौरा चुप खड़ी है।)

जसवन्त : (परास्त कर) अब बोल। मार दूँ जान से। बोल भाभी। भाभी बोल, मैं यह नापाक किस्सा खत्म कर दूँ?

गौरा : पुलिस···पुलिस।

(जसवन्त डर के मारे मोहन को छोड़कर किनारे छिप जाता है। मोहन वहाँ की चीजें सम्हालने लगता है।)

मोहन : ओरी, कहाँ है पुलिस? उल्लू बनाने में तेरा भी जवाब नहीं। देखने में जितनी सीधी है, अन्दर से उतनी ही टेढ़ी है। तभी तेरा मुँह नहीं देखना चाहता। ओरे जसवन्त, डरपोक कहीं का। कहीं पुलिस-वुलिस नहीं। इधर आ। इन बातों से दोस्ती में कोई फर्क नहीं। जा तुझे माफ किया।

जसवन्त : मैं नहीं माफ करूँगा।

मोहन : उल्लू का पट्ठा। देखा है कभी···यह देख उल्लू का पट्ठा।

(खिलौना दिखाता है।)

गौरा : यह खिलौना मेरी बेटी अचला का है।

मोहन : मेरी बेटी इसे कहती थी—उल्लू का पटठा।

(अचला आती है।)

गौरा : अचला बेटी!

मोहन : अचानक इस तरह फोन कर दिया होता। गाड़ी भेज देता।

अचला : वैसे ही सब चल रहा है।

गौरा : तू आनन्द से है न।

अचला : आनन्द। जब माँ आनन्द से नहीं है तो उसकी बेटी···।

गौरा : यह क्या?

मोहन : अरे बेटी, अब सब छोड़ दिया—जरा जुकाम था···डाक्टर ने कहा—अबे, तू यहाँ से भागता है या नहीं···बड़ा आया हँसने वाला। बेटी को अन्दर ले जाओ। कुछ खातिर वगैरह की बात करो।

अचला : पापा, तुम क्यों नहीं करते?

मोहन : तू जा यहाँ से।

जसवन्त : क्यों जाऊँ?

गौरा : इधर आ बेटी।

(दूसरी तरफ)

अचला : माँ!

गौरा : इधर आजा, इधर अकेली ही आयी है?

अचला : हाँ।

गौरा : क्यों, खैरियत तो है न?

अचला : **(चुप है)**

गौरा : क्या हुआ बेटी? हाय, तेरा मुँह कैसा मुर्झाया हुआ है। क्या हुआ मेरी बेटी को?

अचला : मेरी शादी के अभी कुल सात महीने हुए हैं। इस बीच मुझे अक्सर यह कहकर जलील किया गया कि मेरा बाप शराबी है। दो दिन पहले ऐसा हुआ कि उनके एक दोस्त घर आये ···बोले कि आज हम यहीं पियेंगे। मैंने कहा—मेरे घर में शराब नहीं पी जा सकती। दोस्त ने कहा—आपके पति महोदय जो मेरे घर में शराब पीते हैं, उनका हिसाब कौन देगा? मैंने कहा—आप पिलाते हैं, वह पीते हैं, उसमें इस घर का क्या कसूर, मेरा क्या कसूर? बाहर कोई कुछ करे, मैं क्या कर सकती हूँ। दोस्त ने मुझे भद्दी जबान में कहा—क्या मेरा घर बाजार है। 'यू मीन पब्लिक प्लेस।' मैंने उत्तर दिया—जिस घर में इस तरह शराब पी जाती है वह घर

नहीं है। इसपर मेरे हसबेंड ने मेरे मुँह पर झापड़ मारकर कहा—शराबी की बेटी, तेरी यह हिम्मत।

(अचला रो पड़ती है।)

गौरा : चल भीतर, मुँह-हाथ धोले। नहा ले, कपड़े बदल, कैसी हालत बना रखी है।

अचला : नहीं, पिताजी से बात करनी है।

गौरा : धीरे बोल, धीरे।

अचला : नहीं, अब मैं धीरे नहीं बोलूँगी माँ। क्या हुआ माँ जो सारी जिन्दगी मुँह पर पर्दा डाले धीरे-धीरे बोलती रही ?

गौरा : बेटी ! चल अन्दर चल।

अचला : अन्दर नहीं जाऊँगी। पिताजी से बातें करूँगी।

गौरा : बेटी !

अचला : मेरा क्या कसूर है ?

गौरा : पत्नी होना, और पत्नी होकर पति के साथ जीना, मजाक नहीं है।

अचला : तो क्या है ?

गौरा : पति पत्नी पहले स्त्री पुरुष हैं। स्त्री-पुरुष का रिश्ता बना रहे तो और सारे रिश्ते अपने आप ही बनते चले जाते हैं। मिलन से पहले मन-मुटाव होगा ही। इसी में सुफल है अगर धीरज है तो। पति पुरुष है, वह लड़ता है, उसे लड़ाई करनी पड़ती है, नहीं तो उसका जीना मुश्किल है।

अचला : उपदेश बन्द करो माँ।

गौरा : हम चुपचाप आते हैं--कभी बेटी बनकर, कभी माँ, कभी प्रिया बनकर और कभी काली और चण्डी बनकर लेकिन इस लड़ाई भरी दुनिया में स्त्री स्त्री है। अपने पिता को देखना चाहती हो ? देखो, वह देखो।

(संगीत के साथ वहाँ तेज प्रकाश। अचला पास जाती है।

एकटक देखती है। पिता के हाथ से गिलास छीनकर बाहर फेंकती है।)

जसवन्त : यह कौन है ? आसमान की परी।

अचला : पिता जी !

मोहन : कौन ?

(बाँह पकड़कर उठा लेती है।)

अचला : देखो, पहचानो मैं कौन हूँ।

मोहन : ओह मेरी बेटी। वाह वाह वाह ! अरे तू कब आयी ? कितनी दुबली हो गयी है रे।

अचला : चलो, अन्दर बताती हूँ।

(पिता को साथ लिये अन्दर जाती है। जसवन्त उठकर आता है।)

जसवन्त : भाभी, यह कौन है ?

गौरा : देरी अब नहीं हो रही है ?

जसवन्त : क्या चीज है, वाह ? वाह वाह वाह !

गौरा : वह चीज नहीं मेरी बेटी है।

जसवन्त : हम खुदा से कभी कायल ही ना थे। उनको देखा तो खुदा याद आया।

गौरा : अब मुझे लेकर यहाँ से भागना नहीं है ? मैं अब बिल्कुल तैयार हूँ। मौका भी कितना अच्छा है।

जसवन्त : अजब आरजू है अनोखी तलब है। तुझी से तुझे माँगना चाहता हूँ।

गौरा : मतलब ?

जसवन्त : हमने भरी बहार में अपना चमन लुटा दिया।

गौरा : साफ-साफ बात बोलो।

जसवन्त : अचानक यह स्वर्ग की परी कहाँ से आ गयी ? इसमें मेरी कोई गलती नहीं। न तुमने मुझे यहाँ अब तक रोका होता

न मैंने इस नीलम परी को देखा होता।

गौरा : मेरी गलती है।

जसवन्त : पर इसमें गलती क्या है।

गौरा : गलती नहीं है ?

जसवन्त : तलख बातें हमें पसन्द नहीं, जो भी पूछो यह प्यार से पूछो।

(मोहन आता है।)

मोहन : उसकी यह हिम्मत। वह यहाँ मेरे घर आकर, घुटने टेककर हमसे माफी माँगेगा, तभी अपनी बेटी को यहाँ से जाने देंगे।

गौरा : पर क्या यह सच नहीं कि अचला एक शराबी की बेटी है ?

मोहन : अचला तेरी बेटी नहीं है ?

गौरा : बेटी हमेशा बाप की होती है।

मोहन : और माँ की ?

गौरा : सन्तान।

जसवन्त : आखिर 'प्रावलम' क्या है —मेरी कुछ समझ में नहीं आया। अरे मुझे भी तो समझाओ।

मोहन : जान लेने पर उतर जाते हैं लोग। मार-मार के ठीक कर दूँगा।

जसवन्त : बात क्या है ?

गौरा : तुम्हारे समझने की कोई बात नहीं है। जहाँ हो वहीं रहो।

मोहन : मेरी बीवी ठीक कहती है।

जसवन्त : क्या ठीक कहती है ?

गौरा : चीखो नहीं।

जसवन्त : उसे बुलाओ। तुम दफा हो जाओ यहाँ से।

गौरा : सुनली अपने दोस्त की।

जसवन्त : मैं खुद अन्दर जाता हूँ। आखिर वह भी तो मेरी बेटी है।

(बढ़ता है।)

गौरा : नहीं, तुम मेरे घर के अन्दर नहीं जा सकते।

जसवन्त : ओहो, तेरी यह हिम्मत। ले जाता हूँ, कौन रोकेगा मुझे ?

गौरा : (मोहन से) नहीं रोकेगा इस जानवर को ?

मोहन : ओरे क्या करता है। चल बाहर चलते हैं। वक्त हो गया।

जसवन्त : पैसे हैं ?

मोहन : अबे पैसे की क्या कमी है ? गौरा, ला दो सौ रुपये दे।

गौरा : मेरे पास पैसे नहीं है।

मोहन : क्यों यहाँ लफड़ा कराती है। पैसे दे, हम यहाँ से जायें।

गौरा : लफड़ा मैं कराती हूँ ?

जसवन्त : और कौन ?

गौरा : तू चुप रह, वरना आज तेरी खैरियत नहीं।

(अचला आती है।)

अचला : क्या है माँ ? क्या है ?

गौरा : तू अन्दर जा बेटी। मैं कहती हूँ अन्दर जा।

जसवन्त : वह अन्दर नहीं जायेगी। नहीं जायेगी। तू जा अन्दर।

गौरा : क्या है तेरी मंशा जानता है ?

जसवन्त : जानता हूँ क्या है मेरी इच्छा।

गौरा : क्यों है तेरी इच्छा यह भी जानता है ?

जसवन्त : कोई ज़रूरत नहीं।

गौरा : जरूरत है ?

मोहन : मुझे रुपये देती है या नहीं ?

गौरा : नहीं।

जसवन्त : दायें हाथ का वह सोने का कंगन खींच लो।

गौरा : बेटी तू अन्दर जा।

अचला : नहीं।

गौरा : अच्छा, अब तू अपनी माँ को देखना चाहती है। याद रखना जिस दिन यह घूँघट उठेगा मेरे हाथों से, उस दिन मैं यहाँ नहीं रहूँगी। लो, खींच लो मेरा कंगन। खींच लो। दबोच लो। लूट लो।

(मोहन बढ़कर बायें हाथ का कंगन खींचना चाहता है, गौरा उसे धक्का देकर गिरा देती है। जसवन्त अचला की ओर बढ़ता है, गौरा कुर्सी उठाकर जसवन्त को मारती है। शोर और लड़ाई। पहलवान और सिपाही का प्रवेश। गौरा तत्काल सँभलकर फिर घूंघट काढ़ लेती है।)

सिपाही : अरे इहाँ की हो रहा ?

गौरा : कुछ नहीं, कुछ नहीं।

पहलवान : इस कदर शोरगुल, लड़ाई झगड़ा। पड़ौस में रहना मुश्किल कर दिया है। इन दोनों को पकड़कर पुलिस स्टेशन ले चलो।

गौरा : नहीं-नहीं, ऐसा यहाँ कुछ नहीं हुआ।

(गौरा चुपके से सिपाही को रुपये देती है।)

सिपाही : जहाँ चार बर्तन हैं, खुड़का तो होगा ही।

पहलवान : इस पाजी-बदमाश को नहीं छोड़ूंगा, चल बे इधर। चल। अबे अकड़ नहीं।

(पहलवान जसवन्त को खींच ले जाता है। पीछे-पीछे सिपाही जाता है।)

दूसरा दृश्य

(संगीत के साथ प्रकाश उभरता है, उस विशेष स्थान पर जहाँ गौरा में रूपान्तरण होता है।)

गौरा : जो है उससे भागकर जाऊँगी कहाँ ? मैं अपने उस जन्म को नहीं चुन सकती थी, लेकिन इस जन्म को चुन सकती हूँ। वह मेरा जन्म नहीं था, एक जीव का जन्म था। यह मेरा जन्म है। **(बदलती हुई)** मैं जबतक मकान के बाहर खड़ी

थी, मुझे आजादी थी कि चाहूँ तो मकान के भीतर जाऊँ या नहीं। अब इस मकान के भीतर आते ही इसकी सीमा और इसकी गुलामी शुरू हो गई। **(शृंगार उतारती हुई)** मेरे जन्म की आजादी बहुत बड़ी है—इस अर्थ में कि मैं इससे इन्कार भी कर सकती हूँ। लेकिन एक बार स्वीकार करने के साथ नजाने कितनी गुलामियाँ शुरू हो जाती हैं। मैं गुलाम नहीं रह सकती। मैं खुद नया जन्म ले रही हूँ। मैं भाग नहीं रही। मैं जाग रही हूँ। मैं सुन्दर हूँ। आत्मरचना हूँ। कोई अपमान क्यों करे ? कोई अपमान क्यों सहे ? केवल दीवारों से बना यह मकान मेरा घर नहीं ? अपनी जानकी हूँ मैं—अग्नि में रहूँगी, अशोक वाटिका में, या धरती में समा जाऊँगी। आह ! मैं सुहागिन हूँ—!

(वही शक्ति संगीत)

तृतीय अंक

पहला दृश्य

(बन्द दरवाजे पर दस्तक। बाहर से पहलवान की आवाज आती है।)

आवाज : अरे दरवाजा खोलो। पड़ौसी पहलवान हूँ मोहन जी। ओ गौरा बहू ! गौरा बहू ! (दस्तक) मैं हूँ पहलवान (दस्तक) खोलो।

(गौरा बहू अब बिल्कुल बदली हुई दशा, व्यक्तित्व में आती है—बिल्कुल आधुनिकतम शहरी युवती लतिका के उपनाम में। बढ़कर धड़ल्ले से दरवाजा खोलती है। पहलवान उसे देखकर पूरी तरह से घबड़ा जाता है।)

लतिका : क्या है ? बोलता क्यों नहीं ? तेरे बाप का घर है जो आकर भड़भड़ाने लगे ? क्या बात है ?

(पहलवान की बोलती बन्द है। वह जाने लगता है।)

लतिका : दुम दबाकर कहाँ चले ? (कागज-पेंसिल लेकर) तुम्हारा नाम और पता ?

पहलवान : माफ कीजिए मुझसे गलती हो गयी, मैं गलत घर में चला आया। पर घर तो वही है। गौरा बहू अन्दर होगी। (घबराहट में) गौरा बहू ! ओ गौरा बहू !

लतिका : चुप रह। यहाँ कोई गौरा-फौरा बहू नहीं। मुँह ऊपर उठाओ। निगाह ऊपर। मेरी तरफ देखो। आँखें ऊपर।

पहलवान : नहीं, मेरी हिम्मत नहीं।

(पहलवान भागना चाहता था, वह रास्ता रोककर खड़ी हो जाती है।)

लतिका : कैसे नामर्द पहलवान हो, एक औरत की तरफ आँख नहीं उठा सकते ?

पहलवान : देवी जी मुझे माफ कीजिए, आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए।

लतिका : खबरदार, अगर मुझे देवी कहा।

पहलवान : मुझे जाने दीजिए। मैं पड़ौसी हूँ—पड़ोस में रहता हूँ—मोहन जी और उनकी धर्मपत्नी गौरादेवी यहाँ रहते थे। मोहन जी भी नहीं हैं क्या ?

लतिका : तुमसे मतलब ?

पहलवान : तो मोहन जी भी नहीं हैं, उनकी धर्मपत्नी गौरादेवी भी नहीं हैं।

लतिका : रुको। मोहन जी हैं।

पहलवान : मोहन जी हैं। वाह ! मोहन जी, ओ मोहन जी !

लतिका : खामोश ! यहाँ अब कोई चीख-पुकार नहीं। मोहन जी सुबह की सैर करने गये हैं।

पहलवान : मोहन जी और सुबह की सैर, तो वह अपने मोहन जी नहीं, कोई और होगा।

(पहलवान भागता है।)

दूसरा दृश्य

(पहलवान दूर से ही मोहन को देखता है।)

पहलवान : मोहन जी ! मोहन जी !

मोहन : कहिए जी। अरे, आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं।

पहलवान : आप वही मेरे पड़ौसी मोहन हैं न ?

मोहन : जी हाँ बिल्कुल।

पहलवान : कई दिनों से आपके घर में इतना सन्नाटा देखकर मुझे लगा, आप लोग कहीं चले गये। वही देखते मैं अभी आपके दरवाजे पर गया, वहाँ एक असभ्य महिला को देखकर चित्त में बड़ी ग्लानि हुई।

मोहन : देखिए इतनी कड़ी हिन्दी जबान बोलिएगा तो मैं क्या समझूंगा।

पहलवान : मुझे बहुत क्रोध आया हुआ है। वह महिला कौन है? आपकी धर्मपत्नी गौरादेवी कहाँ है? उस बदतमीज ने मेरा अपमान किया।

मोहन : मुझे बहुत अफसोस है।

पहलवान : अफसोस? किस बात का अफसोस? जरा इधर तो आइए —आप इतना डरे-घबड़ाये हुए क्यों हैं?

(पकड़कर एक तरफ ले जाना, पर मोहन को बड़ी तकलीफ हो जाती है।)

मोहन : छुओ नहीं बदन को, बड़ी चोट लगी है।

पहलवान : कैसे?

मोहन : यह नहीं बता सकता।

पहलवान : अवश्य उस बदजात औरत ने मारा होगा।

मोहन : नहीं।

पहलवान : फिर कैसे चोट लगी?

मोहन : यह मेरा निजी मामला है। तुम क्यों टाँग अड़ाते हो? हटो, मुझे जल्दी घर पहुँचना है।

पहलवान : वाह-वाह! जैसे सारी दुनिया रातों-रात में बदल गयी। मोहन कुमार दिन ग्यारह बजे सोकर उठने वाले अब सुबह पाँच बजे उठकर सुबह की सैर करने जाते हैं। दिनभर तो घर से बाहर चक्कर काटता रहता वह अब चूहे की तरह घर में घुसने को बेताब है। गौरा बहू अब कहाँ है? उस बेचारी गरीब को घर से निकालकर यह परकटी हीरोइन कहाँ से ले आये? बताओ, बोलते क्यों नहीं?

मोहन : तुमसे मतलब?

पहलवान : बिल्कुल मतलब है।

मोहन : देखो, मैं बहुत परेशानी में हूँ। तीन रातें हो चुकी हैं, मेरी नींद हराम है।

पहलवान : यह बात हुई ना, नींद हराम है। और ले आओ ऐसी फिल्म-स्टार घर में—चाबुकवाली, हण्टरवाली। पर असली सवाल यह है कि गौरादेवी कहाँ गयी?

मोहन : मैं खुद नहीं जानता कहाँ गयी।

पहलवान : वाह वाह! कितने भोले बनते हो। वह तमंचामार औरत कहाँ से ले आये?

मोहन : मुझे कुछ भी पता नहीं। कुछ नहीं जानता?

पहलवान : पुलिस पूछेगी तब बताओगे। फिर दिन में तारे नजर आयेंगे।

मोहन : मुझपर रहम करो पहलवान भाई, मैं बहुत परेशानियों में हूँ। क्या बताऊँ तुम्हें।

पहलवान : पहलवान भाई—यही तो गौरा बहन मुझे कहती थी। मैं अपनी उस गरीब दुखिया बहन का पता लगाकर मानूँगा। वह कहाँ है? उसे तुमने घर से बाहर निकाल दिया होगा। हो सकता है, उसे जान से ही मार डाला हो?

मोहन : हे भगवान!

पहलवान : अब खूब भगवान याद आयेंगे।

(पहलवान जाता है।)

तीसरा दृश्य

(लतिका सिलाई की मशीन पर कपड़े सिलती हुई दिखती है। फर्श पर कपड़े बिखरे हैं।)

लतिका : (पुकारती है) मोहन! मोहन! (आता है) बहरे हो? कान फूट गये हैं क्या? नाश्ता कर लिया?

मोहन : अभी नहीं।

लतिका : क्यों? क्या कर रहे थे अबतक? कहाँ थे? बोलते क्यों नहीं? इधर आओ। चलो इधर। (**बढ़ती है**)। मुँह खोलो। साँस लो। शुक्र है। मुँह बन्द करो।

मोहन : समझती हो मैं—।

लतिका : नशा चीज ही ऐसी है। जिस पर जाने-अनजाने एक बार चढ़ जाय—छोटेपन का नशा, बड़प्पन का नशा, धन और सम्मान का, ताकत और घमण्ड का नशा—और नशेबाज उसके बगैर नहीं रह सकता। देखो, मुझे भी नशा है।

मोहन : क्या?

लतिका : अपने चरित्र का।

(**लतिका हँसती है।**)

लतिका : नशा जिन्दगी है—मगर नशेबाजी? निगाह नीची? और नीचे हाँ। कान खोलकर सुनो—एक नशेबाज तुम—दूसरा नशेबाज तुम्हारा भाई और बीच में तुम सबकी मैं माई।

मोहन : नहीं। गौरा! मेरी गौरा कहाँ है?

लतिका : गौरा का बच्चा···साला।

मोहन : यह बदतमीजी है।

लतिका : आज टहलने किधर गये थे?

मोहन : मेरी गौरा कहाँ है?

लतिका : तू कहाँ है—इसकी खबर है?

मोहन : तू कौन है?

लतिका : तू कौन है?

मोहन : मैं मैं हूँ।

लतिका : मैं···नशा···।

(**लतिका हँसती है।**)

लतिका : टहलकर आने में इतनी देर क्यों लगी?

मोहन : पहलवान मिल गया था।

लतिका : कौन पहलवान? कोई पहलवान-वहलवान नहीं। खबरदार झूठ बोलने की कोशिश मत करना।

मोहन : तुम्हारे ख्याल से मैं हरवक्त झुठ बोलता हूँ? हाँ, नहीं तो।

लतिका : झूठ और भागना, हर वक्त भागते रहना यही तो नशे की बुनियाद है बेटा।

मोहन : मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।

लतिका : कान पकड़कर कहो।

मोहन : (**कान पकड़कर**)···रास्ते में मुझे वही पहलवान मिला, जो यहाँ तुमसे मिलकर गया था। बेहद गुस्से में था।

लतिका : क्या कह रहा था?

मोहन : तुम कौन हो? श्रीमती गौरा देवी कहाँ है? या तो गौरा देवी को घर से निकाल दिया गया है या उसका खून कर दिया गया है।

लतिका : हुंह। जाओ, झटपट नाश्ता कर फौरन यहाँ आवो।

(**मशीन पर सिलाई करने लगती है।**)

लतिका जाओ, बेवकूफों की तरह क्या खड़े हो? सुना नहीं?

मोहन : मुझे नाश्ता नहीं करना।

लतिका : ठीक है, भाड़ में जाओ। इन कपड़ों को तह करो।

मोहन : (**करता हुआ**) मैं किससे क्या बताऊँ तुम कौन हो? वह गौरा कहाँ है?

लतिका : चुपचाप काम करो, काम।

(**मोहन काम करता है। करते-करते रुक जाता है।**)

लतिका : यही काम हो रहा है?

मोहन : तुम कौन हो? (**लतिका सिलाई में लगी है।**) तुम कौन हो? (**चीखता है।**) तुम कौन हो?

लतिका : तुम कौन हो ?

मोहन : गौरा का पति···हसबेंड।

लतिका : मगर तू खुद क्या है ?

मोहन : गौरा कहाँ है ?

लतिका : ओह ! तुम अब भी इस तरह चीख सकते हो ? न खुद काम करोगे, न मुझे करने दोगे ?

मोहन : हाँ, मैं चीखूंगा, तबतक चीखूंगा, दीवार से सिर टकराऊँगा, जबतक तुम यह नहीं बता देती कि तुम कौन हो ?

लतिका : अच्छा चलो, दीवार से सिर टकराओ। टकराओ दीवार से सिर। देखना चाहती हूँ तुम्हारे सिर से बहता हुआ खून। चलो। टकराओ।

मोहन : सिर टकराना कहावत है।

लतिका : हूँ, तो मैं नहीं बताती मैं कौन हूँ, जबतक तुम नहीं बताते तुम कौन हो क्या हो ?

मोहन : हाथ जोड़ता हूँ।

लतिका : कहो, पैरों पर गिरता हूँ। कहो।

मोहन : हाँ, वही।

लतिका : क्या वही ?

मोहन : जो तुम कह रही हो।

लतिका : मुझे देखो—देखो !

(मोहन देखता है।)

लतिका : कमाल है, मुझे फिर भी पहचान नहीं सके। देखो मेरी तरफ। देखो ! मैं तुम्हारी वही प्रेमिका स्नेहलता हूँ—लतिका नाम तुम्हीं ने दिया था तब, याद करो।

मोहन : लतिका, सचमुच वही लतिका हो। मेरी लतिका। नहीं, तुम वह स्नेहलता नहीं हो।

लतिका : क्यों नहीं हूँ ?

मोहन : मैं स्नेहलता को पहचानता हूँ।

लतिका : मेरे पास बकवास करने का समय नहीं।

(सिलाई करने लगती है।)

लतिका : जल्दी-जल्दी, कपड़े तह करो। आज ही माल भेजना है कम्पनी को।

मोहन : पूछने वालों को क्या जवाब दूँ, तुम कौन हो ?

लतिका : पूछने वालों को मेरे पास भेज दो।

(सिलाई करती है।)

मोहन : किसी समय यहाँ पुलिस आ सकती है। वह पहलवान मामूली आदमी नहीं है।

लतिका : मुझे किसी का कोई डर नहीं।

मोहन : मैं क्या जवाब दूं—मेरी धर्मपत्नी गौरा कहाँ है ?

लतिका : बता देना—पति, पीकर बेहोश पड़ा था। बेचारी को कोई भगा ले गया।

मोहन : लेकिन तुम कौन हो ?

लतिका : पुलिस पहले यह खोजबीन करेगी कि तुम्हारी धर्मपत्नी गौरा कहाँ है ?

मोहन : हाँ, गौरा कहाँ है ?

लतिका : मैं क्या जानूं ?

मोहन : तुम्हें बताना पड़ेगा। तुम कौन हो ? मेरे घर में इस तरह कैसे आई, क्यों आई ?

लतिका : पुलिस में रिपोर्ट कर दो कि तुम्हारी धर्मपत्नी इस तरह अचानक लापता हो गयी है और एक अजनबी औरत इस तरह घर में घुस आयी है।

मोहन : यह क्या किया। हम शरीफ लोग हैं, ऊँचे खानदान के, हम इस तरह अपनी इज्जत पुलिस के हाथ नहीं देते।

लतिका : ठीक से कपड़े तह करो, वरना खाना नहीं मिलेगा। बड़े शरीफ हैं। नशा और शराफत। बीवी बेचकर—पी डाली होगी।

मोहन : मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता।

लतिका : ऊँचे खानदान के हो न। धर्मपत्नी गायब और पुलिस को रपट तक नहीं।

मोहन : जा रहा हूँ रपट लिखाने।

लतिका : बेटा फँस जाओगे। उल्टे हथकड़ी पड़ जायेगी। पुलिस पूछेगी—बीवी को गायब हुए इत्ते दिन हो गये, अबतक कहाँ थे? उसी दिन रपट क्यों नहीं लिखायी? दूसरी औरत के साथ घर में क्यों बने रहे?

मोहन : यह सब तेरी चाल है। मुझे बोलने तक नहीं दिया। मुझे घर से बाहर नहीं जाने दिया। मेरे दोस्त जसवन्त को मारा। मुझे मारा। मेरी बीवी और बेटी को घर से निकालकर।

लतिका : **(बीच ही में)** या उन्हें जहर देकर यह भी कहो।

मोहन : हाँ-हाँ, यह भी मुमकिन है।

लतिका : फिर तो फाँसी पक्की है तुम्हारी।

(दरवाजे पर तेज दस्तक। मोहन घर के भीतर भागता है, लतिका दरवाजा खोलती है। सिपाही और पहलवान का प्रवेश। लतिका आराम से कपड़े सिलने लगती है।)

पहलवान : यही है वह औरत।

सिपाही : ओरी! ओरी···ओरी, जे तो अपणे कार्य में मस्त सें। आवाज दो। वीरवाणी तो फ्रस्ट क्लास। कुछ ऊँचा सुणे।

पहलवान : अजी आप कड़क के बोलो चौधरी जी, पुच्छूँ इसके बाप बोलेंगे।

सिपाही : ओरी लुगाई, मोहन कितसैं? मैं पुच्छूँ मोहन कितसैं?

लतिका : मोहन को क्या पॉकेट में रख छोड़ा है। मोहन, मोहन, मोहन —दो कौड़ी के आदमी।

पहलवान : हमें नहीं, मोहन को कहा है। **(मोहन डरा हुआ दरवाजे पर दिखता है।)** वह रहे मोहन साहब। आइए, इधर आइए।

सिपाही : ओरी, परकटी! अपणी मशीन तो बन्द करे। बड़ी कपड़ा सिड़न लागी।

लतिका : आप लोग कुछ ठण्डा पियेंगे या गर्म?

पहलवान : खबरदार, बड़ी चालू चीज है। इसकी बातों में मत आना, हाँ।

सिपाही : मोहन साहब, यों नयी लुगाई कहाँ से लाये?

मोहन : **(चुप है।)**

पहलवान : जवाब दो, बोलते क्यों नहीं?

लतिका : मैं जवाब दूं?

पहलवान : खबरदार, जबान हिलाई तो?

(आँख मारती है।)

सिपाही : जे बात हुई ना।

लतिका : इंस्पेक्टर साहब। पुलिस के सामने इन्हें कोई हक नहीं, इस तरह बदतमीजी से बात करे। इन्हें हिम्मत कैसे हुई इस तरह पुलिस को लेकर यहाँ आने की? मैं कचहरी में दावा कर सकती हूँ। यह घर है, कोई आम रास्ता नहीं।

सिपाही : ठीक···वैरी गुड बोलैं सैं।

पहलवान : सबूत मिल गया ना इसकी जबान का। मैंने जो कहा था सही निकला ना?

सिपाही : पंड बात तो सही कहे सैं।

पहलवान : आप तहकीकात कीजिए।

सिपाही : देक्खो जी, मेरी नौक्करी पै कहीं ना आ जाय। लुगाई बड़ी फट्टेबाज सैं।

लतिका : सो तो है।

मोहन : क्या देखते हो, इससे पूछो यह कौन है? कैसे घुस आयी मेरे घर में?

सिपाही : पहले तू ही बता—यों कौड़े सैं? कैसे आकर घर में बस गयी सैं?

मोहन : मुझे कुछ पता नहीं ?

सिपाही : वो तुम्हारी बीवी कित गयी सै ? वो सीधी-सादी घूंघट वाली ?

मोहन : पता नहीं। मैं लुट गया।

पहलवान : इससे पूछो चौधरी, इससे।

सिपाही : पुच्छूं भाई पुच्छूं···सबर करो। मामला गहरा दीखै सै। क्यों री, तू कौंड सै ? कित सै आयी ?

लतिका : मैं इसकी धर्मपत्नी हूँ।

सिपाही : जे सम्हालो। अभी तौ कै रहा था—मामला गहरा दीखै सै। इब मैंणे कागज निकाड़ लैन देओ।

लतिका : खड़े क्या हो, कुर्सी लाकर दो।

(मोहन कुर्सी लाता है—सिपाही को लतिका बैठाती है। सिपाही उसकी तरफ देखता है। लतिका उसे फिर आंख मारती है।)

सिपाही : राम राम जी, राम राम !

लतिका : और क्या हालचाल है जी ?

सिपाही : बस-बस, बस्स-अ। अच्छा जी, देक्खो, बीच्च में कोई बोल्ले ना जी, हाँ, जी तो आप इनकी धर्मपत्नी। इनकी पहिल-वाडी धर्मपत्नी कित गयी ?

लतिका : मैं नहीं जानती, मुझसे पहले भी इनकी कोई धर्मपत्नी थी।

सिपाही : अरे धर्मपत्नी थी क्यों नहीं, मैंणे खुद देक्खी सै अपणी आँखों से—घूंघटवाली।

पहलवान : उस शरीफ सीधी-सादी औरत को इन दोनों ने निकाल दिया है। या उसका कत्ल कर दिया है। उसकी लाश कहाँ है ?

सिपाही : क्यों जी मामला इतणा संगीन ?

पहलवान : और नहीं तो क्या ?

मोहन : बिल्कुल।

(लतिका सिलाई करने लगती है।)

मोहन : यह क्या बदतमीजी है। बन्द कर अपनी यह दुकान। जवाब दे, कौन है तू ?

लतिका : करीने से बात करो, वरना जबान खींच लूंगी। मेरी कमाई खाता है, मुझसे जबान लड़ाता है।

मोहन : यह झूठ है, फरेब है।

लतिका : कामचोर कहीं का।

(सिपाही सीटी बजाकर उन्हें रोकता है।)

लतिका : मैं दिन-रात सिलाई-बुनाई करूँ। गार्मेन्ट्स कम्पनी से सिर खपाऊँ। इस कामचोर को सिर्फ पीने से मतलब। मैं इसे अब घर में पीने नहीं देती। अब इसके दोस्त घर में कदम नहीं रख सकते। उनकी हड्डी-पसली एक कर दूं। पर इन्हें शाम को शराब जरूर चाहिए। बाहर नजाने किस दोजख से पीकर आते हैं। सुन लो, कान खोलकर। आज से वह भी बन्द। अगर कहीं से पीकर आये तो सीधे अस्पताल में या पुलिस की हथकड़ी में।

पहलवान : शाबाश !

मोहन : अरे जा-जा, बड़ी आयी। निकल जा यहाँ से। चली जा मेरे घर से।

(सिपाही तेजी से यह सब लिखता जा रहा था।)

सिपाही : हम तुम्हारा झगड़ा सुणन नहीं आये। बकवास बन्द। बता तू कौण है ?

लतिका : यह मेरा शौहर है दाढ़ीजार।

पहलवान : फर्क देख लीजिए, वह श्रीमती गौरादेवी इनकी धर्मपत्नी थी—अब यह इनके दाढ़ीजार शौहर हैं।

लतिका : बार-बार किस श्रीमती गौरा देवी का नाम ले रहे हैं ? मुमकिन है, इस नाम की कोई नौकरानी यहाँ रही हो—देहातन, गवाँडन—मालिक के हाथ बिकी हुई, गाली खाती,

बेइज्जत होती हुई। ईश्वर, देवी-देवताओं वगैरह पर अन्धविश्वास रखने वाली बेवकूफ कोई रही होगी।

पहलवान : ठीक, बिल्कुल ठीक, इसे गौरा देवी के बारे में पूरा ज्ञान और पूरी पहचान है। बताओ वह कहाँ है ? आखिरी बार उसे कब देखा ? कहाँ देखा ?

लतिका : इतना फजूल का वक्त मेरे पास नहीं।

(सिलाई करने लगती है। सिपाही उसके पास जाता है।)

सिपाही : सुणौजी, मुझे इक पैंट-बुशर्ट सिलाणी है। कितना कपड़ा लगेगा ?

लतिका : ठीक से खड़े हो जाओ—नाप ले लूँ।

(टेप से नाप लेती है। सिपाही को तरह-तरह से खींचती-झटकती है।)

लतिका : जाओ, सातवें दिन आना, पैंट-बुशर्ट तैयार मिलेगी।

पहलवान : और कपड़ा ?

लतिका : सिपाही साहब का कपड़ा पहले ही आ गया है मेरे पास।

पहलवान : क्यों जी चौधरी ?

सिपाही : कपड़ा तो कपड़ा है। वगड़ लुगाई का झुट्ट बोल्लै सै ?

मोहन : अव्वल दर्जे की दगाबाज है। इसकी बात का क्या भरोसा ?

सिपाही : मोहणजी, आज की तहकीकात तो हो गयी। आगे की कार्रवाई के लिए पुलिस स्टेशन आणा।

पहलवान : अरे-रे-रे अभी तो कुछ भी नहीं हुआ। श्रीमती गौरा देवी कहाँ गयी, आप इस तहकीकात में आये थे। श्रीमती गौरा-देवी को या तो लापता कर दिया गया या तो उसका खून कर दिया गया।

सिपाही : मोहणजी, चलो मेरे साथ पुलिस स्टेशन। पहले केस रिपोर्ट हो, हैं जी। चलो।

लतिका : जाता क्यों नहीं ?

मोहन : कपड़े नहीं तहियाने ?

लतिका : नहीं, पहले सिपाही जी के साथ पुलिस स्टेशन जाओ।

पहलवान : चलो जी, उसकी ऐसी-की-तैसी।

लतिका : सम्हालो जबान, वरना कैंची से काट दी जायेगी। चुपचाप निकल जाओ।

(सब जाते हैं। लतिका तेजी से कपड़े सिलने लगती है।)

चतुर्थ अंक

पहला दृश्य

(सोहन अपने दफ्तर में बैठा फोन पर बातें कर रहा है लतिका आती है।)

सोहन : कोई उपाय निकालो। अगर दौलत है तो उपाय निकलेगा। और दौलत है मेरे पास। किसी को भी खरीद सकता हूँ। हाँ, खरीद लो। बेफिकर। हाँ-हाँ, जितना कहे दे दो। हूँ-हूँ—इत्ती-सी बात क्यों नहीं समझते—जितनी हमारी लागत होगी, उतनी ही उसकी कीमत चढ़ेगी। खबरदार, सोच-विचार में कभी मत उलझा करो। हाँ, हम उलझाते हैं, खुद नहीं उलझते। यह देखिये—कैसा गहरा नशा है। कैसा नशेबाज है। इसके अलावा जैसे और कोई नहीं है। बेहोश···बेखबर। **(इस बीच लतिका ने अपनी उपस्थिति को कई ढंग से साबित करना चाहा है, पर असफल हो अन्त में किसी चीज को बड़ी जोर से मेज पर पटका है। सोहन घबड़ाकर फोन रखता है।)**

सोहन : यह क्या बदतमीजी है। कौन हो तुम···चपरासी···दरबान!

लतिका : सबको पता है, मैं यहाँ आपसे इस वक्त इस तरह मिलने आयी हूँ।

सोहन : किसने आने दिया यहाँ तुम्हें?

लतिका : आप इस कदर डर क्यों गये?

सोहन : 'यू गेट आउट।'

लतिका : बन्द कीजिए चीखना। मैं गौरा हूँ आपकी बहू। आपके छोटे भाई मोहन की धर्मपत्नी श्रीमती गौरा।

सोहन : क्या?

लतिका : और परिचय देना होगा? अपने खास भाई की आम शादी के लिए आप ही मुझे देखने गये थे। मुझे देखकर कहा था आपने 'एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंप रहा हूँ, तुम्हें। पूरा यकीन है, उसे निभा ले जाओगी।' बिना वह जिम्मेदारी बताये मुझे उसकी जिम्मेदारी दे देना क्या जिम्मेदार आदमी हैं आप भी। कमाल है, कौन था जिम्मेदार उस जिम्मेदारी का और कौन बना दिया गया जिम्मेदार। शादी से पहले आप ही ने मुझे देखा था। शादी के बाद आपके पास एक मिनट का भी मौका नहीं था फिर कभी मुझे देखने का। देखते भी कैसे, मेरा मुख घूँघट में छिपा रहता था। आपके छोटे भाई को मेरे चेहरे से परेशानी होती थी। डॉक्टर ने कहा था—'एलर्जी' है।

सोहन : मेरे पास फजूल का वक्त नहीं है।

लतिका : बिल्कुल—मुझे मालूम है। आपको धन का नशा, आपके छोटे भाई को अभाव का नशा, भाव ने एक को इतना चतुर, होशियार बनाया, अभाव ने एक को इतना पतित···।

सोहन : मैं नहीं जानता तू कौन है?

लतिका : अब ऐसा ही कहना चाहिए। आप वही तो हैं जो बिना मिले, बिना मुझे देखे ही जैसे मुझे पूरी तरह जानते थे। जैसे किसान, नौकरानी, गरीब, मजदूर, विधवा कहते ही एक शक्ल, एक तस्वीर आप लोग बना लेते हैं, ठीक उसी तरह आपके वैसे भाई के लिए एक ऐसी पत्नी नहीं, धर्म-पत्नी होनी चाहिए। उसकी शक्ल और तस्वीर से आपकी पहचान बहुत पुरानी है। इस तरह देखिए नहीं। मैं आपकी

समझ, सूझबूझ की इज्जत करती हूँ। उससे भी ज्यादा मैं अपने-आपको इस बात के लिए सम्मान देती हूँ कि आप इतने 'प्रेक्टिकल' हैं।

सोहन : यह मत भूलो, तुम मेरे भाई की 'वाइफ' हो ?

लतिका : धर्मपत्नी कहिए, 'वाइफ' कहने से काम नहीं चलेगा। खैर, अभी इस रिश्ते को अलग रखिए। इस वक्त मैं आपके छोटे भाई मोहन की धर्मपत्नी, आपसे एक हिसाब करने आयी हूँ। यह सच है कि आप हर महीने की पहली तारीख को नकद एक हजार रुपये मेरे घर पहुँचा देते हैं। उसमें से चार सौ कभी-कभी पाँच सौ, छः सौ रुपये आपके भाई की शराब, दवा, डाक्टर की फीस पर फुंक जाते हैं। मुझे पता है मैसर्स दिलीपराय एण्ड सन्स में सोहन और मोहन के हिस्से बराबर-बराबर हैं। अबतक मेरे पति के हिस्से में कितना कुछ है—मैं वही हिसाब चाहती हूँ।

सोहन : तुम गौरा रहकर भी यह हिसाब देख सकती थीं।

लतिका : उस गौरा को होश भी नहीं था कि उसके पति का कोई हिसाब भी है।

सोहन : मुझे सख्त अफसोस है इसके लिए तुम्हें गौरा से लतिका बनना पड़ा। मुझे यह बिल्कुल नहीं पसन्द।

लतिका : तुम्हारे भाई मोहन को—मोहन से शराबी बनना पड़ा—यह पसन्द था तुम्हें ? एक सीधी-सादी बेवकूफ लड़की को अपने शराबी भाई की धर्मपत्नी बनाना—यही बात पसन्द थी।

सोहन : बेशर्म कहीं की। कोई लाज-शर्म नहीं। बेहया ! ऐसा मेरे घर-खानदान में कभी नहीं हुआ।

लतिका : किसी और घर-खानदान में ऐसा हुआ कि बाकायदा पहले से स्कीम बनाकर किसी की ऐसी बेहूदा शादी की गयी हो ? जान-बूझकर किसी अनजान को आग के कुएँ में ढकेल दिया गया हो ? मैं बीस वर्षों तक अकेली चुपचाप अग्नि-परीक्षा

देती रही, तब कहाँ थे तुम ? क्या हक है कोई शराब पीकर जानवर बने ? क्या हक है कि किसी को दूसरे के लिए कोई फैसला कर ले और उस फैसले के तहद अपने अलावा और सबसे आँख बन्द कर ले ?

सोहन : कितने पैसे चाहिए तुम्हें ?

लतिका : अब पैसे नहीं अपना हिसाब। अब तक अपने भाई को दान की शक्ल में जो पैसे भीख की तरह देते रहे उसीका अंजाम है वह जानवरों जैसी जिन्दगी जीने वाला तुम्हारा भाई। वह शराब के नशे में अपने-आपको भूला रहे—यही था आपके हक में।

सोहन : मैं पूछता हूँ—कितने रुपये चाहिए तुम्हें ?

लतिका : रुपये नहीं हिसाब। अब हिसाब चाहिए।

सोहन : तुम अपना हिसाब देख सकती हो ?

लतिका : बेशक।

सोहन : क्या सबूत है कि तुम सोहन की वही धर्मपत्नी हो जिसका नाम गौरा था ?

लतिका : वाह ! आप नशे की हालत में भी सोचते हैं। आप जानते हैं, मैं गौरा हूँ पर वही गौरा नहीं हूँ। वही गौरा बने रहने की जितनी कीमत मैं चुका सकती थी—कभी ऐसा करना पड़ता है और करना ही चाहिए—अपने बाहियात पुराने को मारकर अपने-आपको नया जन्म देना।

सोहन : मेरी ताकत नहीं जानतीं।

लतिका : पहले उतना ही जानती थी—वही केवल आपकी ताकत। पर एक दिन यह जान लिया कि ताकत तो मेरे पास भी है।

सोहन : अपनी असलियत जानती हो ?

लतिका : मेरी असलियत आप जानते हैं।

सोहन : (देखता रह जाता है।)

लतिका : यह सोच रहे हैं कि अब कौन-सी ऐसी तरकीब की जाये कि

मेरी बोलती बन्द हो सके। मैं गौरा थी सदा वही गौरा रहूँ, सदा वही जुल्म और अत्याचार सहती रहूँ—मैं वही बेवकूफ, नासमझ, डरपोक औरत रहूँ, जिसका अपने पति से अलग न कोई वजूद है न सोच-समझ। एक गरीब कुँवारी लड़की थी गौरा जो शादी के नाम पर खरीदकर श्रीमती गौरा बनायी गयी। गौरा एक नाम था। गौरा एक शरीर थी, एक आकार एक पहचान—पर वह इतनी ही नहीं थी—वह अपने-आपमें एक नजीर है—सिर्फ पर्दा हटाकर एक बार अपने-आपको देख लेने की बात थी। कोई कुछ भी हो सकता है—सिर्फ फैसला कर लेने की बात है। (अकड़) ऐसे क्यों देख रहे हैं? ऐसी औरत पहले कभी नहीं देखी थी? हाँ, नहीं देखी होगी—बेहया, निडर और समझदार—हाँ, जिस दिन समझ आ जाती है उस दिन—आह!

सोहन : चाहती क्या हो अब?

लतिका : अपना अधिकार।

सोहन : मेरे साथ चलो।

लतिका : चलिए।

सोहन : पूछोगी नहीं···कहाँ?

लतिका : मुझे विश्वास है।

सोहन : मुझ पर?

लतिका : अपने आप पर।···मुझे घूरिए नहीं जहाँ कहीं भी चलना है चलिए। इस बात को याद रखिए—आपने अपने भाई के लिए मेरी माँ से उसकी बेटी गौरा को खरीदा था, गौरा से मुझे नहीं।

सोहन : तू कौन है?

लतिका : यह प्रश्न मत कीजिए, वरना आपको उत्तर देना हो सकता है कि आप कौन हैं?

(अंधेरा। संगीत। वही सिपाही की सीटी हँसी। आवाजें।)

दूसरा दृश्य

(सिपाही अपना डण्डा पीटते हुए एक ओर निकल जाता है। दूसरी ओर से मोहन और जसवन्त आते हैं।)

मोहन : ओरे, दिन के कितने बजे हैं?

जसवन्त : दिन नहीं रात है रे।

मोहन : दिन है रे दिन। सूरज नहीं दिखाई दे रहा तुझे। कितना कहा ज्यादा मत पी। हमें रोजी के पास चलना है। उसने मुझे खासतौर पर बुलाया है ठीक सवा बजे।

जसवन्त : अबे सवा बजे नहीं, सवा ग्यारह बजे।

मोहन : नहीं सवा बारह बजे।

जसवन्त : दिन के नहीं, रात के।

मोहन : रात तो है।

जसवन्त : नहीं दिन है दिन। सूरज नहीं दिखाई दे रहा तुझे। कितना कहा ज्यादा मत पी। हमें रोजी के पास चलना है···।

मोहन : दिन नहीं रात है बे।

जसवन्त : अभी तो दिन का सूरज दिख रहा था। अरे चलेगा भी या जम गया यहीं।

मोहन : पहले यह तै हो जाना चाहिए कि रात है या दिन। तुझे क्या लगता है?

जसवन्त : मुझे गुस्सा लगता है। सूरज नहीं दिखाई दे रहा तुझे। कितना कहा ज्यादा मत पी। हमें रोजी के पास चलना है।

मोहन : इससे पता चलता है इस वक्त दिन है।

जसवन्त : नहीं, रात है।

मोहन : जो तू कहेगा मैं उसका उल्टा कहूँगा—क्योंकि तेरी खोपड़ी उलट गयी है। देख, तू मेरा यार है न, मेरी बात मान जा—रोजी इन्तजार कर रही होगी।

जसवन्त : तू भाड़ में जा। मैं चला अपने घर।

मोहन : (**रोकता है। संघर्ष होता है दोनों में**) मैं तेरे पाँव पकड़ता हूँ। क्या तू मेरा यार नहीं है ? देखो भाई, दिल मत तोड़ो।

जसवन्त : छोड़ मुझे।

मोहन : नहीं-नहीं, छोड़ूंगा।

जसवन्त : छोड़ता है या नहीं ?

(**सिपाही दिखता है।**)

सिपाही : कोण सै रे ? (**पास आता है।**)

मोहन : पहले तुम बताओ तुम कौन हो ?

जसवन्त : बिल्कुल ठीक।

सिपाही : (**जसवंत को पकड़ लेता है।**) चल तू ही बता···बता तू कौण सै ?

मोहन : (**पकड़ लेता है**) अच्छा पहले यह बताओ यह रात है या दिन ?

सिपाही : यह दिण भी है और रात भी।

मोहन : तेरी यह हिम्मत (**सिपाही को मारता है।**) तूने हमें समझ क्या रखा था ?

(**सिपाही लड़खड़ाकर गिर पड़ता है।**)

जसवन्त : हम चाहें तो तुझे जान से मार सकते हैं।

सिपाही : ऐसे सांडों से।

(**परस्पर मारपीट। रोजी आती है। सब देखने लगते हैं।**)

मोहन : रोजी ! माफ करना मुझे देरी हो गयी।

जसवन्त : हम आ ही रहे थे बीच में यह मिल गया घनचक्कर।

सिपाही : अरे तू ?

(**वह इशारा करती है। सिपाही पहचान जाता है।**)

मोहन : देरी की वजह मैं खुद हूँ। मैं अपनी रोजी के सामने झूठ नहीं बोल सकता।

रोजी : देखा न सिपाही साहब। नशा काफूर हो जाता है (**हंसती है, जादूभरी हँसी**) कितना सज्जन और शरीफ हो जाता है मोहन रोजी के सामने वाह। गौरा के सामने क्यों नहीं ? अरे, तेरा इन्तजार करती रही।

मोहन : फिर ?

रोजी : प्रीतम को ढूँढ़ने चली।

(**इसी संगीत पर नृत्य**)

सिपाही : आहा !

रोजी : प्रीतम को ढूँढ़ने चली।

सिपाही : आहा !

रोजी : हवा चली। कली खिली।

(**सिपाही की टोपी लेकर छिपा देती है। फिर उसकी सीटी लेकर बजाती है।**)

रोजी : चोर चोर चोर।···हाय प्रीतम को ढूँढ़ने चली।

(**सिपाही भागता है।**)

रोजी : तुम मेरे लिए क्या ले आये ?
जसवन्त : जान हाजिर है।
रोजी : देखूँ तुम्हारा बटुआ ? **(बटुआ लेकर)** ऊहूँ किसकी फोटो लगा रखी है ?
जसवन्त : तुम्हारी है मेरी जान।
मोहन : नहीं, इसकी पत्नी की है।
रोजी : इतना सच मत बोलो यार। प्रीतम को ढूँढ़ने चली।
मोहर : रोजी, मैं सच बोलना और सच जीना चाहता हूँ। सच के सिवा और कुछ नहीं चाहता।
रोजी : तो यह मैं ले लूँ ?
जसवन्त : ले लो। हाँ-हाँ ले लो। पहले प्यार करने दो। तुम्हारा मुँह किधर है ? मुँह···ओठ।
रोजी : यह।

(रोजी के पैर का चुम्बन लेता है। रोजी धक्का मारकर गिरा देती है।)

जसवन्त : कितना प्यारा धक्का दिया।
रोजी : प्रीतम को ढूँढ़ने चली।

(दोनों को कान पकड़कर उठाती-बैठाती है।)

मोहन : कौन हो तुम ?
रोजी : पहचानो—देखो कौन हूँ मैं ?

(वही नृत्य-गान)

मोहन : जसवन्त, चलो यहाँ से। यह रोजी नहीं।

(सिपाही उन्हें रोकता है।)

मोहन : जसवन्त !
रोजी : मोहन।
जसवन्त : क्या है ?
मोहन : चलो।
रोजी : कहाँ ? घर ? वहाँ कौन है ? क्या वहाँ ? घर कहाँ है ? बोलते क्यों नहीं यार। भगाकर कहाँ जाओगे ? खबरदार !

(दोनों भयभीत भागते हैं। सिपाही हँसता है।)

रोजी : राम-राम चौधरी।
सिपाही : मान गया बेटी।
रोजी : बेटी ?
सिपाही : मान लिया बेटी सो मान लिया। अपण को तो कोई बाल बच्चा नहीं है। सो तू मेरी चग्गड़ बेटी।'

(दोनों देखते रह जाते हैं।)

तीसरा दृश्य

(पहलवान को साथ लिए हुए मोहन अपने घर में आता है।)

मोहन : वह भीतर होगी। जरूर होगी।
पहलवान : मैंने नहीं देखा।
मोहन : सुबह के आठ कब के बजे हैं। वह भीतर मजे से सो रही होगी।
पहलवान : तुम कहाँ से आ रहे हो ?

मोहन : टहलकर।

पहलवान : गौरा बहू होती तो अबतक चाय हमें मिल जाती।

मोहन : वह छिपकर हमें देख रही है।

पहलवान : इतना डरोगे उससे तो काम कैसे चलेगा? फिर तो घर छोड़ना होगा। भूखों मरोगे। अपने भीतर इतनी ताकत पैदा करो। धक्के देकर निकाल दो उच्चकी को।

मोहन : धीरे-धीरे, मेरा मतलब जग न जाय।

पहलवान : चूड़ियाँ पहनकर बैठो। मैं चला।

मोहन : नहीं-नहीं, मैं इतना बुजदिल नहीं। देख, मेरा नाम मोहन है। मुझे जब गुस्सा चढ़ जाता है तो···।

(लतिका आती है।)

लतिका : क्या बड़बड़ मचा रखी है। जाओ, चाय बनाकर लाओ। फौरन। जल्दी। जाओ।

(मोहन भीतर जाता है।)

लतिका : हाँ, तो पहलवान साहब, आपको श्रीमती गौरादेवी से बहुत हमदर्दी थी?

पहलवान : और नहीं तो क्या?

लतिका : कितनी हमदर्दी थी? गौरादेवी की हिफाजत में कभी कुछ किया? क्या किया? रुको, चाय पीकर जाओ। श्रीमती गौरा के पति मोहन के हाथ की चाय। बैठो, सुना नहीं, बैठो। (बैठता है।) गौरा की कभी कोई मदद की? हाँ, यही मदद की उसके पति की बदनामी की। हर वक्त उसे नफरत से देखा और बदनाम किया। उसका बदला उसने उल्टे गौरा से लिया। बाहर सुनी हर बात का हिसाब उसने गौरा से चुकाया।

(मोहन आता है।)

लतिका : क्या है? बोलते क्यों नहीं? बोलो।

मोहन : मुझसे चाय नहीं बनती।

लतिका : मारने और पीने के अलावा कुछ और भी आता है इन हाथों को? पहलवान साहब, पहले आपको इनकी धर्मपत्नी श्रीमती गौरा से हमदर्दी थी, अब आपको श्रीमती गौरा के धर्मपति से हमदर्दी है?

पहलवान : हाँ, है।

लतिका : है, तो धर्मपति महोदय से पूछो—यह रात-भर कहाँ थे?

मोहन : कौन होती है तू आर्डर देने वाली?

लतिका : तू कौन है इस घर में कदम रखने वाला?

मोहन : यह घर मेरा है।

लतिका : कैसा घर? जिसमें कुछ कमरे होते हैं? कुछ दीवारें? कुछ सामान। एक छत। एक बैठक, एक रसोई, एक मर्द।

पहलवान : बताओ न, कहाँ थे रात-भर?

मोहन : सुबह टहलकर तो आ रहा हूँ।

पहलवान : रात-भर इस घर में थे?

मोहन : था।

तलिका : निकल जाओ। चले जाओ यहाँ से। झूठे। कायर—बुजदिल।

(पहलवान भागता है। लतिका रोक लेती है।)

लतिका : कुत्ते! तुम्हें झूठ और सच में फर्क करने की जरा भी ताकत नहीं। तुम लोगों की जिन्दगी में झूठ के अलावा और कुछ है। झूठ के दर्द से बचने के लिए यह शराबी हुआ, तुम पहलवान हुए—इसका भाई काले बाजार का सौदागर हुआ। सब ऐश की जिन्दगी जीते हैं और रहना चाहते हैं बस भ्रम में कि वे जिन्दगी जी रहे हैं। तुम इसके हमदर्द नहीं, क्योंकि तुम खुद अपने हमदर्द नहीं। पहलवान बनते

हो—हो कायर, झूठों का साथ देते हो। पहलवान थे बजरंगवली हनुमान जी। देखा है हनुमान जी को ? वह देख।

(प्रकाश)

पहलवान : अच्छा देख लूँगा।

लतिका : देखना है तो अभी देख। भागना है तो भाग जा। **(पहलवान जाता है। मोहन को नहीं जाने देती)** तू भागकर कहाँ जायेगा। या तो तेरा भागना खत्म होगा या मैं खत्म होऊँगी। तुझे छोड़ूँगी नहीं, क्योंकि अपने आपको नहीं छोड़ सकती। तेरे हर दर्द और चोर की दवा होगी, पर तूने यदि मेरा—मतलब अपना—साथ न दिया तो—देखो अपने आपको—देखो अपना यह घर। देखा यह घर है ?

(भीतर जाती है। मोहन बढ़कर बिखरे हुए कपड़ों को समेटकर रखने लगता है। बाहर से सोहन आता है।)

सोहन : हैलो मोहन, क्या हाल-चाल हैं ?

मोहन : बहुत दिनों बाद हाल-चाल पूछने आये ?

(भीतर से ट्रे में चाय लिये लतिका आती है।)

लतिका : ओह आप ! बैठिए।

सोहन : नहीं, बैठूँगा नहीं। यह लो अपना हिसाब। ये रहे कागजात। यह है चैक।

(लेकर देखती है।)

मोहन : यह क्या है ?

सोहन : तुम्हारा हिसाब।

मोहन : मेरा हिसाब उसे क्यों दिया ?

लतिका : जिसने हिसाब माँगा, उसे मिला।

मोहन : इससे मेरा कोई ताल्लुक नहीं। यह घुसपैठी है मेरे घर में। इससे पूछो मेरी गौरा कहाँ है ? सुनता क्यों नहीं ? मेरी बात पर ध्यान क्यों नहीं देता ?

सोहन : मुझे जल्दी है।

मोहन : मुझे भी जल्दी है। उसे क्यों दिया मेरा हिसाब ? यह कौन है मेरी ? अब समझा, पहले उस गौरा से उस तरह मेरी शादी कराके मुझे बर्बाद किया। फिर गौरा को गायब कर इस नागन को यहाँ। तो यह तेरी साजिश है। मैं तेरा सिर तोड़ दूँगा।

लतिका : चुप रहो। चलो इधर। खबरदार।

(मोहन गुस्से के साथ किवाड़ पर सिर मारता है। गुस्से से चीखता है।)

मोहन : यह मेरा दुश्मन। क्यों आया मेरे घर में ? निकल जा मेरे घर से।

लतिका : चुप रहते हो या नहीं ?

मोहन : नहीं।

(सोहन चुपचाप चाय पी रहा है। लतिका एक चाबुक निकालती है।)

मोहन : हाँ-हाँ, मारो मुझे। मुझे जान से मार दो। जैसे मेरी गौरा को मार दिया। लो, मुझे मारकर गायब कर दो, जैसे मेरी गौरा को मारकर गायब कर दिया। यह मेरा दुश्मन। तू कातिल।

(चीखते-चीखते रो पड़ता है।)

लतिका : बन्द करो रोना-धोना। बन्द करते हो या नहीं ?

(मोहन मुँह छिपाकर चुपचुप रोता रहता है। लतिका बढ़कर कपड़े तह करती हुई।)

लतिका : अब उस गौरा की याद आ रही है—मारने को और कुछ नहीं है अब। गौरा-गौरा-गौरा, अपनी नफरत उतारने के लिए एक सीधी-सादी बेवकूफ औरत। गौरा नहीं है तभी इतनी प्यारी हो गयी। जो है, उसे कुबूल नहीं कर सकते, जो नहीं है, उसके लिए हाय हाय। जो सामने थी उसे कभी आँख उठाकर देखा तक नहीं, जो सामने है उससे कहाँ भागोगे? नशा करके तुम बदल जाते हो, मगर ये सच्चाइयाँ तो नहीं बदल जातीं। हाँ, नशे में सच्चाइयाँ बदली हुई नजर आती हैं। लेकिन जब नशा उतरता है —जब उतर चुकता है नशा—(**कपड़ा छोड़कर फाइल उठाती है। मोहन के पास आती है।**) देखो, पढ़ो इसे। देखो, तुम्हारे हिसाब में डेढ़ लाख रुपये हैं। यह है तुम्हारा हिसाब। तुम अपने बड़े भाई सोहन से बदला लेना चाहते हो न?

मोहन : हाँ।

लतिका : सोहन को मात देना चाहते हो न?

मोहन : हाँ-हाँ।

लतिका : सोहन ने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया। सोहन को सजा मिलनी चाहिए न। बताओ, क्या होनी चाहिए वह सजा।

मोहन : वह झुके मेरे पैर छूकर माफी माँगे।

लतिका : ठीक, फिर तुम शराब छोड़ दोगे?

मोहन : छोड़ दूँगा।

लतिका : अपनी गौरा से अक्सर कहते थे कि अगर एक लाख रुपये की पूँजी मिल जाये तो वह कमाई करके दिखा दोगे कि सोहन तुम्हारा मुँह देखता रह जाये। पूँजी तुम्हारे पास ही है। अब बोलो क्या करोगे?

मोहन : पहले तुझे इस घर से निकालूँगा। फिर गौरा को ढूँढ़ निकालूँगा।

लतिका : बताओ कैसी थी गौरा? कभी उसका मुँह देखा? तुम्हें तो

इतनी नफरत थी कि उसे अपने चेहरे पर घूँघट डालकर रहना पड़ता था।

मोहन : तुझसे मतलब?

लतिका : मतलब था। मतलब है।

मोहन : यह यहाँ इस तरह क्यों बैठा है?

लतिका : तुमसे पैर छूकर माफी माँगने के लिए।

सोहन : यह क्या कहती हो?

लतिका : मैं तुम्हारे पैर छूकर तुमसे माफी माँगती हूँ अगर इतने से…।

सोहन : कोई फायदा नहीं, यह सबकुछ करके देख लिया गया है।

लतिका : मैंने नहीं देखा है।

सोहन : मुझे जाना है।

मोहन : निकल जा।

सोहन : किस बात के लिए मैं इसके पैर छूकर माफी माँगूँ?

मोहन : गिनाऊँ वे बातें?

लतिका : नहीं। (**सोहन के पैर पकड़कर**) जिस बात पर मैं तुम्हारे पैर पकड़कर तुमसे माफी माँग रही हूँ…उसी बात पर सिर्फ एक बार…मेरे लिए…इसकी जिन्दगी के लिए।

सोहन : तुम्हें यकीन है?

लतिका : है।

(**सोहन मोहन के पैर पकड़कर**)

सोहन : मोहन भाई, मैं अपनी गलतियों के लिए तुमसे माफी मांगता हूँ।

लतिका : भाई को वचन दो अब कभी शराब नहीं पिओगे। वचन दो।

मोहन : भाई को वचन दूँगा, तू कौन है?

सोहन : भाई साहब, अन्दर चलो…इसके सामने वचन नहीं दूँगा।

लतिका : नहीं, सब कुछ एक बार मेरे सामने होगा। चलो।

मोहन : वचन देता हूँ अब शराब नहीं छुऊँगा।
लतिका : छुऊँगा नहीं, शराब नहीं पिऊँगा। नशा नहीं करूँगा।
मोहन : शराब नहीं पीऊँगा। नशा नहीं करूँगा।
लतिका : तुम भी वचन दो नशा नहीं करोगे ?
सोहन : मैं और नशा। क्या बकती हो ?
लतिका : पीना ही नशा नहीं है। यह घमंडी जिन्दगी, ये दिखावे, ये गुस्से, एक-दूसरे को छोटी निगाह से देखना—यह क्या नशा नहीं है ? सारे नशे की जड़ में यही नशा है—
सोहन : मैं जाता हूँ।
लतिका : हर नशा दूसरे के लिए बर्दाश्त के बाहर है।

(सोहन जाता है।)

लतिका : सब देख पढ़ लिया न। सोहन से अब कोई झगड़ा नहीं न ?
मोहन : सोहन मेरा भाई है।
लतिका : कहाँ जाते हो ?
मोहन : बिजनेस करने से पहले गौरा का पता लगाऊँगा।
लतिका : मैं ही हूँ गौरा।
मोहन : झूठ···फरेब।
लतिका : यह धन, यह कागज, यह हिसाब, सोहन का वह पैर छूकर माफी माँगना—झूठ फरेब था ? तो तेरा दिया हुआ वचन—वह कसम···सुन ले कान खोलकर यहाँ कुछ भी झूठ फरेब नहीं है—सिर्फ सच है···सच, अब इससे भागने की कोशिश की तो, तू नहीं रहेगा—या मैं नहीं रहूँगी।
मोहन : बड़ी आयी।
लतिका : कहाँ जा रहे हो ?
मोहन : तुमसे मतलब।

(लतिका देखती रह जाती है। मोहन चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(रात का समय। लतिका सिलाई कर रही है।)

अचला : माँ, अब तो बन्द करो। ग्यारह बज गये।

(कार्यरत है लतिका। अचला रेडियो बन्द कर माँ के पास आती है।)

अचला : चलो माँ, अब आराम करो।

(लतिका सिलाई बन्द करती है।)

लतिका : जा तू आराम कर।
अचला : मैं तो आराम ही करती हूँ—वहाँ भी यहाँ भी। दोपहर को यहाँ मुझे छोड़कर गये—मेरे पतिदेव—दो दिनों के लिए बाहर गये हैं···।
लतिका : ऐसे क्यों बोल रही है ?
अचला : वे घर से बाहर जाते हैं शराब पीने। यह मुझे अभी पिछले दिनों पता चला। वह बाहर से आये। संयोग से मैंने उनकी अटैची खोली। उसमें आधी बोतल शराब पड़ी थी। मैंने पूछा यह क्या है ? वे बोले—मेरे दोस्त राजू की है—भूल से रख दी है। मैं राजू के पास गयी। राजू ने साफ कहा—तो क्या हुआ भाभी, बाहर ही तो पीता है, आपका पति।
लतिका : जो छिपकर पीता है, जो पीकर भी झूठ बोलता है, फिर भी जो दूसरे को शराबी कहकर अपनी शान बघारता है—इस रोग का इलाज क्या है—कभी सोचा ?
अचला : मुझे अभी पता चला है।
लतिका : (उठती है।) उससे पूछा नहीं कि फिर तुझे यह शराबी की लड़की क्यों कहता है।

अचला : छोड़ो माँ। चलो आराम करो।

लतिका : इन नशेबाजों के बीच हमें आराम कहाँ। तूने उसे पकड़कर मारा क्यों नहीं ? ओह ! वह तेरा पति है।

अचला : माँ, परेशान मत हो, माँ…।

लतिका : मेरी परेशानी की तुझे इतनी ही चिन्ता होती तो मुझसे कहती नहीं लड़ती।

अचला : सब तुम्हारी तरह नहीं लड़ सकते हाँ। (रुककर) दोपहर को जब मैं यहाँ आयी थी, तुम कितनी खुश थीं। मेरे बाप को उतनी पूँजी मिल गयी। वह कोई इण्डस्ट्री लगायेंगे। सबकुछ बदल जायेगा।

लतिका : तुझे अब भी मेरी बातों पर यकीन है ?

अचला : हाँ, माँ।

लतिका : कोई और बात कर बेटी ?

(आग बुझाने की गाड़ी की आवाज)

लतिका : कहीं आग लगी है।

(खामोशी)

लतिका : नजाने कैसा लग रहा है। अरे, हाँ, तुझे एक मजेदार बात बताऊँ। पुलिस जब यहाँ आकर बहुत तंग करने लगी तो फैसला किया कि पुलिस के सबसे बड़े अफसर से मिलूँ। पर मिल पाना इतना आसान था क्या ? उनके नीचे का स्टाफ पूछता—क्या काम है ? किसकी शिकायत है ? मामला क्या है ? किसकी ओर से आयी हो। एक ने तो पूछा—किसकी मुर्गी हो ? (हँसना) फिर मैंने कहा—मैं साहब की मौसी हूँ।
मौसी…मौसी…मौसी को अंग्रेजी में क्या कहते हैं ?

(हँसती है। उसी बीच बाहर दरवाजे पर मोहन की आवाज उभरती है।)

मोहन : जाओ यहाँ से। मुझे किसी की जरूरत नहीं। साले घर तक छोड़ने आये हैं। जाओ। खड़े क्या हो ?

(मोहन आता है। माँ-बेटी देखती रह जाती हैं।)

मोहन : मेरी प्राण प्यारी स्नेहलता। देखो, तुम्हारा मोहन आया है। बोलेगी नहीं रुठी हो ?

अचला : पिताजी।

मोहन : यह कौन है हमारे बीच ? भाग जा यहाँ से। दूर हो हमारी आँखों से।

अचला : माँ, तू कुछ बोलती क्यों नहीं ?

(लतिका संकेत करती है। अचला एक किनारे जा खड़ी होती है।)

मोहन : बड़ी गहरी नदी थी, अँधेरी रात—तैरकर आया हूँ नदी से। देखो सारे कपड़े भीग गये। कोई बात नहीं। अरे तुम्हें छूते ही सारे कपड़े सूख गये। यहाँ पहुँचने के लिए रोज घर से चलता था, मगर पता ही भूल जाता। अब चलो यहाँ से। जल्दी करो नहीं तो वह चुड़ैल आ जायेगी। सोहन को गला घोंटकर मार दिया। उसे गायब कर दिया। उसे भी खत्म कर दिया। अब कोई डर नहीं। चलो। कोई सामान लेने की जरूरत नहीं है। सबकुछ है मेरे पास। पूरा सजा हुआ बंगला है। ड्राइवर। गाड़ी आ गयी। कार तुम्हारे लिये हैं। बिल्कुल नयी। लो बैठो। नहीं पहले तुम। कुछ तो सेवा करने दो यार। हवाई जहाज से चलेंगे। ओ ड्राइवर, हवाई अड्डे पर चलो। कितनी

ऊँचाई पर एरोप्लेन उड़ रहा है। अरे स्नेहलता, स्नेहलता।

(लड़खड़ाकर गिर पड़ता है। बड़बड़ाता हुआ सो जाता है। अचला दौड़कर आती है।)

अचला : माँ। यह क्या है ? कुछ बोल क्यों नहीं रही ? क्या माँ ?
लतिका : हाँ, बता क्या है ?
अचला : ऐसे क्यों देख रही हो ?
लतिका : मेरी माँ बहुत गरीब थी। मैंने उससे एक बार पूछा—ऐसा क्यों है माँ ? उसने कहा—प्रश्न मत करो बेटी, वरना अकेली हो जायेगी।
अचला : पिताजी ऐसे ही पड़े रहेंगे ?
लतिका : (चुप)
अचला : चलो उठाकर पलँग पर।
लतिका : मुझसे अब नहीं होगा।
अचला : माँ !
लतिका : (चुप)
अचला : माँ।
लतिका : (चुप)
अचला : तुम इस तरह हार जाओगी तो···।
लतिका : तो ?···तो ? मैंने सबका ठेका ले रखा है ? और मैं हूँ कौन ? गौरा···लतिका···रोजा···स्नेहलता···कौन हूँ मैं ? गौरा। गौरा मेरे चारों ओर घूम रही है। हाँ-हाँ, तू हारेगी नहीं। तू उसी अग्नि में सुरक्षित है। मैं इस लंकापुरी में ले आयी गयी तो क्या ? नहीं, मैं अकेली नहीं। मेरे साथ असंख्य स्त्रियाँ हैं इस लंकापुरी में। अकेला रावण है।
अचला : माँ, भीतर चलो तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।
लतिका : इतनी मुश्किल से भीतर से बाहर आयी हूँ। कोई राम आकर रावण को मार देगा—यह मेरा यकीन नहीं। मेरे लिए राम प्रथम पुरुष नहीं है, मैं हूँ अपना प्रथम पुरुष।

क्या स्त्री प्रथम पुरुष नहीं···हम चाहते हैं कि कोई और आकर हमारी जिम्मेदारी ले ले। ऐसे नहीं होता। मेरा काम मेरे ही हाथ होगा।

(अन्दर जाती है। अचला मोहन को जगाती है।)

मोहन : (उठकर) क्या है ? ऐसे क्यों देख रही है ?
अचला : माँ बहुत नाराज है।
मोहन : कहाँ है तेरी माँ ? गौरा ! गौरा !! कहाँ है तेरी माँ ?
अचला : लतिका गौरा है। वही मेरी माँ है।
मोहन : तू भी उसीके साथ मिल गयी ?
अचला : फिर शराब क्यों पी ?

(अलग दूर अँधेरे में खड़ी लतिका दिखती है।)

अचला : फिर शराब क्यों पी ?
लतिका : बीमार।
अचला : बोलो फिर शराब क्यों पी ?
लतिका : मजबूर।
अचला : अपना वचन क्यों तोड़ा ?
लतिका : जानवर !
अचला : बोलो, माँ का विश्वास क्यों तोड़ा ?
लतिका : उसे तोड़ने का हक है। पति जो है।
अचला : माँ के गुस्से को नहीं जानते।
लतिका : तू भी नहीं जानती अपनी माँ को। केवल इतना जानती है माँ इसकी पत्नी है। इस परिचय, पहचान और रिश्ते को मैं खत्म कर दूंगी। और बर्दाश्त नहीं कर सकती। और कोई उपाय नहीं है। मौत के मुँह में पड़े गरीब, विवश, लाचार जानवर को मार देना होगा। मारूँगी। जरूर मारूँगी।

(शक्ति संगीत-प्रकाश)

अचला : माँ !

लतिका : माँ का काम मारना भी है।

अचला : माँ !

लतिका : माँ जन्म देती है। माँ पालन करती है। माँ को जीवित रहना है।

(वह शक्ति दृश्य आलोकित होता है जहाँ दीवार पर एक ओर गौरा के वस्त्र टँगे हैं। दीवार पर देवी के चित्र बने हैं। सिन्दूर और टिकुलियाँ लगी हैं। लतिका दर्पण उठाकर अपना मुँह देखती है। अपने माथे पर टीका पोंछकर दीवार पर लगाती है। एक बड़ी-सी टिकुली दीवार से उतारकर माथे पर लगाती है। देखकर प्रसन्न होती है। टिकुली को फिर दीवार पर चिपका देती है। फिर एक थाली में अपने हाथ की चूड़ियाँ निकालकर रखती है। वायुमण्डल में कहीं शक्ति संगीत)

पाँचवाँ दृश्य

(लतिका ट्रे में ड्रिंक्स लिए आती है। अचला देखकर डर जाती है।)

अचला : माँ !

लतिका : ड्रिंक्स। साथ दोगी ?

अचला : यह क्या करती हो माँ ?

लतिका : कब तक वही प्रश्न पूछती रहेगी बच्चों की तरह, कभी जवाब देगी।

अचला : यह ड्रिंक्स नहीं, जहर है।

लतिका : पीने वाले को यह पता है।

अचला : इसमें जहर मिलाकर।

लतिका : तुझे कैसे पता चला ?

अचला : मैंने देखा है। पहले तुमने हाथ की चूड़ियाँ उतारी, माथे का सिन्दूर-टीका उतार फेंका। यह फैसला तुम्हारी आंखों में···

लतिका : मेरी आँखों में ? कौन-सी आँखें ? किसकी आँखें ? मुझे पता नहीं था, यह काम इतना आसान है।

अचला : आसान है।

(अचला रो पड़ती है।)

लतिका : चल हट, मेरे सामने से। बेवकूफ बुजदिल। ऊपर से यह रोना। एक आग से दूसरी आग में। एक अग्नि समाधि से दूसरी अग्नि-परीक्षा तक। सोने की लंका नगरी, मेरी इसी आग से जलेगी। **(ट्रे को मोहन के सामने रख देती है।)** बता, क्यों इस तरह अग्नि में डाली गयी मैं ? बोल।

अचला : इसके लिए कौन जिम्मेदार है ?

लतिका : सब जिम्मेदार हैं। जो अभाव में है उन्हें नशा चाहिए। जो भाव में हैं वे उस नशे में चूर हैं।

अचला : माँ !

लतिका : नहीं, अब कुछ नहीं बोलना। चुपचाप अपना काम करना। रोशनी बुझा दे।

अचला : नहीं।

लतिका : मुझे पता है— तू कैसे किस जबान में इन लोगों को बतायेगी। लोग मुझे क्या कहेंगे। यह मैं खूब जानती हूँ। इसके बाद क्या कुछ होगा मैं उसे अभी से महसूस कर रही हूँ। बेहया के दर्द को किसने जाना है ? हर चीज की तरह दर्द की भी एक सीमा होती है। उसके बाद कहीं कुछ नहीं लगता।

अचला : पिताजी, होश में आ जाओ।

लतिका : यह हमसे कहीं ज्यादा होश में है। इनकी होश में सिर्फ वही एक चीज है।

अचला : तुम्हें क्या अधिकार है ?

लतिका : इसे क्या अधिकार था ? तेरे पति को क्या अधिकार है ? मैं खुद रोशनी···।

अचला : नहीं, मैं शोर मचाऊँगी, चीखूंगी।

लतिका : मुझे अपनी तरह समझती है।

अचला : पिताजी जागिए। उठिए पिताजी।

मोहन : क्या मैं मोहन के अलावा और कुछ नहीं हूँ ?

लतिका : खामोश···मत देख मुझे इस तरह।

मोहन : एकटक देखता रहूँगा।

(खामोशी—वही शक्ति संगीत)

लतिका : कितने डॉक्टर, वैद्य, हकीम, पण्डित पुजारी आये, कोई नहीं काट सका मेरे पति के अभाव को। इसकी उलझी हुई भीतर की गाँठें कोई नहीं खोल सका। कोई दवा नहीं दे सका इस बीमारी की। असाध्य रोग का यह बीमार इतनी पीकर भी प्यासा रहा, इसकी प्यास मुझे बुझानी है। एक ही घूंट में आज सदा के लिए उसकी प्यास बुझ जायेगी। आप सब इसके चश्मदीद गवाह होंगे। मैं होऊँगी हत्यारिन, अपराधिन—वह भी अपने पति की। हे माँ !

(इस बीच अचला ने मोहन को सबकुछ दिखा दिया है—खासकर वह अतिप्रकाशित स्थल जहाँ शक्ति प्रतिमा चित्रित है। लतिका की उतारी हुई टिकुली-चूड़ियाँ हैं।)

लतिका : लो पियो, आज मेरे हाथों से।

अचला : पिताजी, नहीं, नहीं पिताजी।

मोहन : पीऊँगा। जरूर पीऊँगा।

अचला : जहर है।

मोहन : सबको पता है फिर भी लोग क्यों पीते हैं ? इसका जवाब मैं इसके हाथों से पीकर दूंगा।

अचला : नहीं।

मोहन : उठाओ अपने हाथों से। दो मुझे।

लतिका : सामने है।

मोहन : कभी अपने हाथों से नहीं पिलाया। अपने इन्हीं हाथों से पीता रहा। इन हाथों के पीछे कितने-कितने हाथ हैं। उन्हीं हाथों से मैं···

लतिका : (उठाती है।) यह लो।

अचला : माँ !

लतिका : (गुस्से में) भाग जा यहाँ से। चली जा। दूर हो जा मेरी आँखों से। मैं किसी की माँ नहीं।

(संघर्ष करती हुई अचला को घर से बाहर निकाल दरवाजा बन्द करती हुई)

लतिका : जा, सारी दुनिया को बुला ला। सब एक तरफ मैं अकेली। मैं अकेली। ले। पी।

मोहन : इतने गुस्से में।

लतिका : खामोश !

मोहन : जैसी तेरी खुशी।

(लतिका के हाथ से लेकर देखता है। पीने चलता है।)

लतिका : नहीं।

(छीन लेती है।)

लतिका : यह मैं पीऊँगी।

मोहन : नहीं, पीने वाला मैं हूँ। झूठा मक्कार नामर्द···किसी काम का नहीं। दो कौड़ी का भी नहीं। किसी से कोई रिश्ता नहीं···खुदगर्ज···घमण्डी ; मैं एक रेंगता हुआ कीड़ा। खत्म करो इसे। मार दो।

(संघर्ष)

लतिका : मैं अब बातों में नहीं आने की। मैं अब इस तरह जिन्दा नहीं रह सकती।

मोहन : अच्छा आखिरी बार···आखिरी बार···लेकिन एक शर्त है, तुम वही गौरा हो जाओ, जिसे पहले मैंने कभी नहीं देखा।

लतिका : एक शर्त पर। तुम वही मोहन हो जाओ, गौरा के विवाह से पहले का मोहन।

मोहन : मोहन। मैं···मोहन।

(कमरे में सामानों के भीतर न जाने क्या ढूंढ़ना शुरू करता है। बाहर बन्द दरवाजे पर तेज दस्तक। मोहन जाकर दरवाजा खोल देता है।)

मोहन : आओ ! देखो-देखो; सब लोग मोहन को। मोहन की गौरा को।

(बाहर से अचला और पहलवान आते हैं। लतिका अपने हाथ के पात्र से वह पेय गिराती है।)

मोहन : देखो ! यह मेरा घर है।

(लतिका गौरा के वस्त्र-आभूषण धारण करती है। शक्ति संगीत छा जाता है।)

मोहन : गौरा।···मोहन।

(पुलिस सिपाही दौड़ा आता है।)

सिपाही : देखो। जे हे मेरी लाड़ो बेटी।

मोहन : देख रहा हूँ।

(शक्ति संगीत)

—पर्दा—

□ □